



Prabha प्रभा

The Prabha Khaitan Foundation Chronicle

SPECIAL EDITION | Issue 47

रामायण कला उत्सव

साहित्य और कला में रामायण



17 Subipta Khaitan 2023

॥ रामायण ॥ रामायण ॥ रामायण ॥ रामायण ॥

॥ रामायण ॥ रामायण ॥ रामायण ॥ रामायण ॥

॥ रामायण ॥ रामायण ॥ रामायण ॥ रामायण ॥

॥ रामायण ॥ रामायण ॥ रामायण ॥ रामायण ॥

॥ रामायण ॥ रामायण ॥ रामायण ॥ रामायण ॥ रामायण ॥



॥ Sudiptakundu2023 ॥



MANISHA JAIN
Communications & Branding Chief,
Prabha Khaitan Foundation

Stories of Our Soil

Myths are an integral part of different cultures. Along with being stories about gods and supernatural figures, they are the subjective truths of people who lived many thousands of years ago and the foundations of many rituals that continue to be performed. Most myths are of religious significance, which explains why these narratives survive for so long. The *Ramayana* — one of the two most important epics in Hinduism — has a sustained relationship with millions of people in India. To many, the *Ramayana* takes them back to their childhood initiation into the oral tradition of storytelling; they heard its stories from their grandparents.

To celebrate the life of Lord Ram and the lessons and values the *Ramayana* upholds, **Prabha Khaitan Foundation** organised a boutique festival called the *Ramayana Kala Utsav*. Tales about and around the holy city of Ayodhya immortalise the birthplace of Ram. With this festival, we brought together thinkers, writers, artists, cultural curators and so many people from all over the country to soak in the smells of Ayodhya and learn about its cultures. With many enlightening discussions and breathtaking performances contextualising the *Ramayana*, this distinctive three-day festival will stay in our hearts.

Held over three days in April, the *Ramayana Kala Utsav* was inaugurated in the august presence of the Padma Shree-winning author, Vidya Vindu Singh, and IG Ayodhya Range, Praveen Kumar. Shinjini Kulkarni, **Ehsaas** Woman of Noida, transported us to the world of the *Ramayana* through her spellbinding dance performance, and offered us a glimpse of Sita that we are not very familiar with. The Padma Bhushan and Padma Vibhushan-winning artist, Sonal Mansingh, blurred the boundary between her art and reality, and made us feel as if we were in Sita's *swayamvar*. Some panel discussions situated the *Ramayana* through many centuries, while some took us through the many perspectives and readings that the *Ramayana* lends itself to. The sessions were not only about what happened in the remote past; one of them established the link between Sita's prophecy and climate change, underscoring how the epic is relevant in modern times.

We are grateful to Anant Vijay for helping the Foundation curate this unique festival. We also extend our gratitude to Bimalendra Mohan Pratap Mishra, the scion of the Ayodhya royal family, and his family members for gracing the *Ramayana Kala Utsav* that the **Ehsaas** Women of Lucknow and Kanpur put their hearts into curating. A special vote of thanks is owed to Ramasharan Awasthi, who was instrumental with his help in Ayodhya. A walk by the river Sarayu and to some places of religious significance added to the spiritual experience. This festival transcended all contentions and was an ode to our culture and to Hinduism, bringing alive many long-lost stories of an ancient city.

Manisha Jain

Onward and Upward

Prabha Khaitan Foundation organises diverse events across India, but a singular goal runs through them all — the intention to uphold the plethora of cultural, culinary, literary, linguistic and religious traditions the country prides itself on. In recent times, the Foundation has been organising unique festivals that refuse to remain restricted to one category. These are a manifestation of our quest to think beyond the familiar. These festivals are about bringing to light many unknown cultural entities and forgotten histories intrinsic to human lives. With spring approaching as a harbinger of hope, the Foundation organised a boutique literature festival in February called *Shaharnama*. This one-of-its-kind festival was a tale of many cities that brought together authors, artists, journalists and activists from every nook of the country.

Alongside celebrating the arts, cultures, food, histories and traditions of different cities, *Shaharnama* opened the windows of our minds and invigorated us. Its resounding success emboldened the Foundation to take this unique model forward. Thus was born the idea of the *Ramayana Kala*

Utsav, which took shape as a cultural and literary descendant of *Shaharnama*. The *Ramayana* is an integral part of many Indians' lives; so why not organise a festival that sheds light on the epic and rises above the mainstream discourses that cloud people's understanding of it? Taking off from the success that *Shaharnama* met, the Foundation organised the *Ramayana Kala Utsav* in Ayodhya in April. Here are a few glimpses into the work, meetings and collaborations that went into its making!



Dimple Trivedi and Deepa Mishra during a recce visit in Ayodhya



Geeta Malhotra, Sundeep Bhutoria, Dimple Trivedi, Deepa Mishra, Kanak Rekha Chauhan, Madhuri Halwasiya and Anindita Chatterjee meet in Lucknow



श्री राम हमारी प्रज्ञा, परंपरा, समृद्ध विरासत, महान सभ्यता, समुन्नत संस्कृति और लोकजीवन में प्रवाहित आस्था के वाहक हैं। वे हमारी अस्मिता और गरिमा के प्रतीक तो हैं ही, जीवन से मृत्यु तक हमारी जीवनचर्या के सतत सहचर भी हैं। उनकी नगरी अयोध्या आस्थावान भारतीयों की आध्यात्मिक आत्मा का प्रतिनिधित्व करती है। इसीलिए प्रभा खेतान फाउंडेशन ने अपने सहयोगी अहसास वूमैन लखनऊ और कानपुर के सहयोग से तीन दिवसीय 'रामायण कला उत्सव' का आयोजन अयोध्या में किया।

इस उत्सव में राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय ख्याति के चिंतकों, विचारकों, लेखकों, विशेषज्ञों, कलाकारों और संस्कृतिकर्मियों के साथ ही राम कथा रसिकों ने भी भाग लिया; और कला, साहित्य, लोक में व्याप्त श्री राम-जानकी, राम कथा और रामायण की उपस्थिति की चर्चा की।

बौद्धिक-विमर्श के सत्रों 'श्रीराम की अस्मिता और भारत की पहचान', 'रामकथा में जानकी का महत्व', 'सदियों से रामायण का कथन-पुनर्कथन', 'आधुनिक संदर्भ में रामायण', 'रामायण में युद्ध और कूटनीति', 'प्रदर्शन कलाओं में रामायण', 'लोक में राम', 'वैश्विक संदर्भ में रामायण और उसके पात्र', 'अयोध्या में संगीत परंपरा', 'फिल्मों में श्रीराम का चरित्र-चित्रण' ने इस उत्सव को एक विशिष्ट गरिमा प्रदान की।

उत्सव के ये त्रि-दिवस देश भर से जुटी अहसास वूमैन की उर्जावान स्त्री-शक्ति, निस दिन भजन और लोक संगीत के कर्णप्रिय सत्रों से हर क्षण जीवंत रहे। यहां शक्ति स्वरूपा मां सीता द्वारा अहंकारी 'सहस्र रावण का दमन', 'शबरी प्रसंग', 'में ककेयी', 'मंदोदरी' और 'कथा सियाराम की' जैसी सांस्कृतिक प्रस्तुतियों ने सबका मन मोह लिया।

प्रभा का यह अंक 'रामायण कला उत्सव' को समर्पित है। इस अंक के अगले पृष्ठों में आप इस उत्सव के शब्द-चित्र, झांकी देखें, यही हमारा उद्देश्य है, साथ ही आप सबके जीवन में राम के आदर्श और उनका लोकमंगल उतरे, यही कामना!

श्री सीमेंट के संरक्षण में आजादी के अमृत महोत्सव वर्ष में आयोजित 'रामायण कला उत्सव' को संस्कृति मंत्रालय भारत सरकार और नॉलेज पार्टनर के रूप में साहित्य अकादेमी की सहायता प्राप्त हुई।

‘रामायण कला उत्सव’ का उद्घाटन समारोह: अयोध्या की महिमा और सिया-राम का गुणगान



“भारत की संस्कृति राम-सीता, शिव-पार्वती की संस्कृति है। इसे आगे बढ़ाने की, इसे संरक्षित करने की संस्कृति की जरूरत है। चाहे कला के माध्यम से, चाहे साहित्य के माध्यम से, चाहे लोक परंपराओं के, संस्कारों के माध्यम से यह संस्कृति बची रहे तो हमारा देश विश्व गुरु बन जाएगा।” पद्मश्री से सम्मानित वरिष्ठ लेखिका विद्या विंदू सिंह ने यह बात प्रभा खेतान फाउंडेशन और अहसास वूमैन की ओर से अयोध्या में आयोजित तीन दिवसीय ‘रामायण कला उत्सव’ के उद्घाटन समारोह में बतौर मुख्य अतिथि कही।

माता रामो मत पिता रामचंद्रः, स्वामी रामो मत सखा रामचंद्रः,

सर्वस्वमे रामचंद्रो दयालु, नरन्नियम नैव जाने न जाने...के उल्लेख के साथ सिंह ने अयोध्या की पावन धरती पर इस कार्यक्रम के आयोजन को लेकर खुशी जताई और श्री राम की अस्मिता, माता सीता पर आधारित कार्यक्रम के लिए आयोजकों को साधुवाद



Dimple Trivedi, Deepa Mishra, Kanak Rekha Chauhan, Apra Kuchhal, Anindita Chatterjee and Aarti Gupta with Vidya Vindu Singh and Praveen Kumar as they light the inaugural lamp

दिया। फाउंडेशन की संस्थापक डॉ प्रभा खेतान को याद करते हुए उन्होंने कहा कि आज यहां उनकी सूक्ष्म उपस्थिति होगी। उन्होंने कहा कि सनातन, संस्कृति, परंपरा और हमारे पूर्वजों की विरासत को आगे बढ़ाने की दिशा में यह कार्यक्रम एक बड़ा उपक्रम है।

सिंह ने कहा कि जो लोग राम और सीता की अस्मिता पर सवाल उठा रहे हैं वे यह भूल रहे हैं कि सीता और राम हमारी सांसां में, जीवन के अंग-अंग में बसे हैं। राम राज्य में प्रकृति भी अनुकूल हो जाती है। आज पूरा विश्व राम की ओर देख रहा है। तुलसी के रामचरित मानस से, चाहे राम कथा, हमारे लोकगीतों के माध्यम से पूरे विश्व में राम कथा का प्रसार हुआ।

हर भाषा में इनका अनुवाद हो रहा है, जो यह बताने के लिए पर्याप्त है कि राम जन-जन के हैं। 'सीय राममय सब जग जानी। करउँ प्रनाम जोरि जुग पानी' के साथ उन्होंने आयोजकों और सहयोगियों का नमन किया।

उद्घाटन समारोह में विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित अयोध्या रेंज के पुलिस महानिरीक्षक प्रवीण कुमार ने आयोजकों के इस प्रयास की प्रशंसा की और कहा कि विश्व संस्कृति पुरुष के रूप में जिस तरह से श्री राम, उनकी मर्यादा और रामायण को कला और साहित्य में तलाशने, परखने और निष्कर्ष निकालने की जो कोशिश है वह सराहनीय है। उन्होंने कहा कि रामायण की कथा इस देश के हर राज्य में, हर भाषा में लिखा गया। आखिर कुछ न कुछ विशिष्टता तो इस कथा में है ही कि इसके आस्वादन से, इसका रस लेकर लोग इसमें मंत्रमुग्ध हो जाते हैं। इसके लिए साक्षर होना जरूरी नहीं है। निरक्षर लोग भी साहित्य को संगीतमय प्रस्तुति में पाकर आत्म विभोर हो जाता है।

कुमार ने कहा कि यह इस देश की बहुत बड़ी शक्ति है, जो रामायण के रूप में, राम कथा के रूप में, राम के अस्तित्व के रूप में, राम के प्रतीक के रूप में और राम के साथ जुड़े हुए महान पात्रों और संस्कृति के समावेश के रूप में व्याप्त है। इन्हें देखकर हम सब आगे बढ़ें। राष्ट्रकवि मैथिली शरण गुप्त ने लिखा है, 'राम, तुम्हारा चरित स्वयं ही काव्य है। कोई कवि बन जाय, सहज संभाव्य है।' यह उनके चरित की व्यापकता है। उनकी एक महिमा है। राम हमारी संस्कृति और सांस्कृतिक परंपरा के ऐसे प्रतीक हैं, जो तर्क से परे हैं। वे तर्क से परे भाव और भक्ति में ऐसे व्याप्त हैं, जिसमें तर्क विलुप्त नहीं होता बल्कि प्रबुद्ध होकर



Manjari Mishra, Vandana Singh, Anant Vijay and Shraddha Murdia

निकलकर आता है। यह किसी तर्क और आस्था पर खरी उतरती है। यह अनंत यात्रा है। निराला की 'राम की शक्ति पूजा' को याद करते हुए कुमार ने कहा कि यह कथा उर्जा की वाहक है। उन्होंने विस्तार से अपनी बात रखी और 'श्री राम राम रामेति, रमे रामे मनोरमे। सहस्रनाम तत्तुल्यं, श्री राम-नाम वरानने' से अपनी बात समाप्त की और आयोजकों, प्रतिभागियों को शुभकामना दी।

'रामायण कला उत्सव' के उद्घाटन समारोह का संचालन अहसास वूमन लखनऊ डिंपल त्रिवेदी ने किया। उन्होंने साहित्य समाज के बीच, संतों के कुंभ और सीता के आंगन में 'अतिथि देवो भव' के उद्घोष के साथ अतिथियों का अभिनंदन किया और औपचारिक स्वागत वक्तव्य के लिए अहसास वूमन कानपुर आरती गुप्ता को आमंत्रित किया। गुप्ता ने कहा कि अयोध्या की इस पावन धरती पर अपनी तरह के इस पहले आयोजन के अपने अर्थ हैं। श्री राम हमारी सभ्यता, महान संस्कृति और हमारे लोकजीवन में प्रवाहित आस्था के वाहक हैं। वे हमारी अस्मिता

और गरिमा के प्रतीक तो हैं ही, जीवन से मृत्यु तक हमारे सतत सहचर भी हैं।

उनकी नगरी अयोध्या आस्थावान भारतीयों की आध्यात्मिक आत्मा का प्रतिनिधित्व करती है। यह नगरी अजेय रही है। यह श्री हरि के प्रभु श्री राम के रूप में मनुष्य अवतार लेने की भूमि भर नहीं है। यह उनकी बाल लीला की पावन भूमि और कर्मस्थली भी है। पवित्र सरयू नदी के तट पर बसी अयोध्या के बखान के साथ ही उन्होंने इस धर्मनगरी को राम राज्य का केंद्र भी करार दिया।

फाउंडेशन के राजस्थान और मध्य भारत मामलों की मानद समन्वयक अपरा कुच्छल ने फाउंडेशन



Vidya Vindu Singh, Udai Pratap Singh and Praveen Kumar

जो आज भी फाउंडेशन को प्रेरणा देता है। उन्होंने बताया कि फाउंडेशन ने पिछले चार से भी अधिक दशक से भारत के साहित्यिक और सांस्कृतिक धरोहर को प्रोत्साहित करने, बढ़ावा देने और संरक्षित करने की शानदार पहल की है। कला, साहित्य, संस्कृति, शिक्षा, पर्यावरण, वन्यजीवन और महिला सशक्तीकरण की दिशा में फाउंडेशन भारत और विदेश के 50 से ज्यादा शहरों में सक्रिय रूप से उपस्थित है। इसे श्री सीमेंट लिमिटेड का संरक्षण, देश के प्रतिष्ठित उपक्रमों, संस्थानों, सहयोगियों और अहसास वूमन की सहायता प्राप्त है। कुच्छल ने साहित्यिक कार्यक्रमों की विस्तार से जानकारी दी और स्थानीय शिल्प, हथकरघा और स्थानीय व्यंजन को बढ़ावा देने के अलावा शिक्षा के क्षेत्र में 'बुक रैक' की स्थापना और पुस्तक वितरण जैसी गतिविधियों की भी जानकारी दी।

का परिचय दिया। उन्होंने कहा कि अयोध्या नगरी उस सभ्यता और संस्कृति का प्रतीक है जो सहस्र वर्षों से विश्व को जीवन जीने का मार्ग देती आई है। यह तय है कि राम और अयोध्या को कोई शक्ति अलग नहीं कर सकती, क्योंकि राम तो राष्ट्र की चेतना में प्रवाहित होने वाले प्राण हैं, जिनके बिना भारत की कल्पना नहीं की जा सकती। इसी तरीके से संस्कृति और संसार प्रभा खेतान फाउंडेशन से अलग नहीं किया जा सकता। 'नाम राम को अंक है, सब साधन हैं सूना। अंक गए कुछ हाथ नहीं, अंक रहें दस गुना।' के साथ उन्होंने कहा कि अजेय अयोध्या की परम पावन भूमि पर 'रामायण कला उत्सव' में आप सबकी उपस्थिति से हम गौरवान्वित हैं।

कुच्छल ने बताया कि सांस्कृतिक रूप से सक्रिय, महान साहित्य प्रेमी, नारीवादी लेखिका डॉ प्रभा खेतान ने 1980 के दशक में कोलकाता में इस संगठन की आधारशिला रखी। वे 'कर्म ही जीवन है' के मूलमंत्र को मानती थीं,

हरि अनंत हरि कथा अनंता। कहहिं सुनहिं बहुबिधि सब संता।

रामचंद्र के चरित सुहाए। कल्प कोटि लागि जाहिं न गाए... के साथ ही त्रिवेदी ने अहसास वूमन का परिचय देने के लिए अहसास वूमन कोलकाता एषा दत्ता को आमंत्रित किया। दत्ता ने बताया कि अहसास वूमन, प्रभा खेतान फाउंडेशन की महिला अधिकारिता शाखा है। यह जीवन के विविध क्षेत्रों से संबद्ध महिलाओं का ऐसा समूह है, जो समाज को मजबूती प्रदान करने और उसे बढ़ावा देने के लिए एकजुट होती हैं। महिला सशक्तीकरण के कट्टर संरक्षक के रूप में फाउंडेशन को भारत भर में अहसास वूमन के साथ काम करने में गर्व और प्रसन्नता की अनुभूति होती है।

एहि महं रघुपति नाम उदारा। अति पावन पुरान श्रुति सारा।

मंगल भवन अमंगल हारी। उमा सहित जेहि जपत पुरारी... के साथ ही त्रिवेदी ने 'रामायण कला उत्सव' की जानकारी देने के लिए अहसास वूमन लखनऊ कनक रेखा चौहान को बुलाया। चौहान ने कहा कि श्री राम के चरित को करोड़ों कल्पों में गाया नहीं जा सकता है, फिर भी यह हमारा छोटा सा प्रयास है कि हम 'रामायण कला उत्सव' में मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम, श्री राम से जुड़ी गाथा, श्री राम के चरित, श्री रामायण के पात्र, श्री राम के आदर्श, श्री राम की मर्यादा आदि का स्मरण करेंगे।

प्रभा खेतान फाउंडेशन की कार्यकारी न्यासी अनिदिता चटर्जी ने सभी अतिथियों का स्वागत और मुख्य अतिथि और विशिष्ट अतिथि का अभिनंदन किया। 'रामायण कला उत्सव' का शुभारंभ दीप प्रज्वलित कर हुआ। उद्घाटन समारोह की आखिरी प्रस्तुति अहसास वूमन नोएडा, नृत्यांगना शिजिनी कुलकर्णी की मनोहारी प्रस्तुति थी। उन्होंने अद्भुत रामायण के एक प्रसंग, जिसमें शक्ति स्वरूपा मां सीता ने अहंकारी सहस्र रावण का दमन अपने एक ही वार में किया था, की प्रस्तुति दी। 'नारी माता, बहन है, नारी जग का मूल, नारी चांडी रूप है, नारी कोमल फूल' के साथ सुकुमारी मां सीता के भद्र काली रूप की इस प्रस्तुति ने सबका दिल जीत लिया।



Suchitra Sajid Dhanani, Surbhi Dhupar and Shruti Agarwal



Apra Kuchhal



Aarti Gupta



Dimple Trivedi



Kanak Rekha Chauhan



Esha Dutta



Malika Varma and Koral Dasgupta



Vedula Ramalakshmi and Asha Prabhat



Deepa Mishra and Anshu Mehra



Anubha Arya and Anvita Pradhan



Nidhi Garg and Monica Bhagwagar

हम भारतीयों के जीवन के हर प्रसंग श्री राम और सीता से जुड़े हुए



Vidya Vindu Singh

Udai Pratap Singh

“पूरी सृष्टि में सीता का दुख, सीता की तपस्या, सीता का अनुराग, सीता का सौम्य भाव, उनका स्वाभिमान, सम्मान समा गया है। उनके दुख से वन के पत्ते-पत्ते रोने लगते हैं।” यह कहना है पद्मश्री से सम्मानित हिंदी की वरिष्ठ लेखिका डॉ विद्या विन्दु सिंह का। वे अयोध्या में आयोजित ‘रामायण कला उत्सव’ के प्रथम सत्र ‘श्रीराम की अस्मिता और भारत की पहचान’ विषय पर बोल रही थीं। इस सत्र में राम कथा के मर्मज्ञ डॉ उदय प्रताप सिंह ने भी अपने विचार रखे। वार्ताकार की भूमिका आरती गुप्ता ने निभाई। **अहसास** वूमेन लखनऊ कनक रेखा चौहान ने स्वागत और धन्यवाद देने के साथ ही सत्र का परिचय दिया। उन्होंने कहा कि श्री राम और भारत की अस्मिता एक दूसरे पर कितने निर्भर हैं, यह आप इस सत्र के हमारे प्रमुख वक्ताओं से सुनेंगे। श्री राम के बिना भारत और भारतीयता की कल्पना करना भी मुश्किल है। सर्वशक्तिमान श्री हरि के अवतार, अयोध्या के राजकुमार श्री राम से, वनवासी श्री राम, और फिर धर्म संस्थापक श्री



Aarti Gupta

राम से मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम तक- श्री राम जीवन से मृत्यु तक हम आस्थावान भारतीयों के रोंम-रोम में व्याप्त हैं।

अतिथिद्वय का संक्षेप में परिचय देते हुए चौहान ने कहा कि डॉ विद्या विन्दु सिंह की विविध विधाओं पर अब तक 118 पुस्तकें प्रकाशित हैं। पद्मश्री से सम्मानित डॉ सिंह देश-विदेश की 25 से भी अधिक संस्थाओं से सम्मानित हो चुकी हैं। सत्र के दूसरे वक्ता उदय प्रताप सिंह भक्ति साहित्य पर 23 से अधिक पुस्तकों के लेखक और हिंदुस्तानी एकेडमी प्रयागराज के पूर्व अध्यक्ष हैं। आप भाषा भूषण सम्मान, गुलाबराय सर्जना पुरस्कार आदि से सम्मानित हैं।

संवादकर्ता गुप्ता ने श्री राम का गुणगान करते हुए पहला प्रश्न विद्या जी से किया और पूछा कि आपकी सभी रचनाओं और कृतियों में राम और सीता का इतना सहज चित्रण कैसे है? उनका उत्तर था, "श्री राम इसी धरती पर आए और पूरे विश्व में छा गए। भारत का हर नागरिक, हर व्यक्ति राम को जीता है। मैंने भी इसी अवधि भूमि पर जन्म लिया और बचपन से ही लोकगीतों के माध्यम से जो रामकथा मेरे मन में उतरती गई, उसका इतना गहरा प्रभाव पड़ा कि मैं कुछ भी लिखती हूँ तो उसमें राम सीता आ जाते हैं। क्योंकि यह एक ऐसी शक्ति है, जो ईश्वर होते हुए भी, इतने सहज हैं कि आप उनसे बात कर सकते हैं, उन्हें छू सकते हैं, उनका अनुभव कर सकते हैं। उनकी यह सहजता ही सबको प्रेरित करती है और सबके मन में जगह बना लेती है।" उन्होंने राम जन्म की बधाई का एक सोहर गीत भी सुनाया और कहा कि साहित्य के अलावा राम लोक में बहुत अनूठे ढंग से व्याप्त हैं। जीवन के हर प्रसंग श्री राम और सीता से जुड़े हुए हैं। कई बार लगता है कि राम की कथा सीता जी के कथा की छांव है। सीता की ओजस्विता इन लोकगीतों में भी मिलती हैं।

गुप्ता ने डॉ उदय से पूछा कि सदियों से श्री राम के जीवन ने लोगों को प्रेरित किया है। आज के युवाओं की सोच पर श्री राम क्या प्रभाव डाल सकते हैं? उनका उत्तर था कि 'सीय राममय सब जग जानी। करउँ प्रनाम जोरि जुग पानी।' अभी विद्या जी ने श्री राम जन्म का सोहर सुनाया, पर राम अब चलने लगे हैं। 'तुमक चलत राम चंद्र, बाजत पैजनिया।' वस्तुतः श्री राम का स्मरण करना, अपनी संस्कृति का स्मरण करना है। राम के जीवन का कोई ऐसा आयाम नहीं है, जिससे भारतीय लोग प्रभावित नहीं हैं। काग भुसुंडि से लेकर जो रामायण कथा सुनाई गई, वेदों, उपनिषदों में आई, फिर भक्ति साहित्य में आई। निर्गुण-सगुण में आई। आखिर राम में कोई तत्व ऐसा है, जो ये चीजें चली आ रही हैं। उन्होंने कहा कि कबीर साहब और रैदास भी राम को दशरथ का पुत्र नहीं मानते हैं, लेकिन राम तत्व की अनिवार्यता को वे दोनों ही स्वीकारते हैं। कबीर साहब लिखते हैं- 'राम बियोगी ना जिवैं जिवैं तो बौरा होई'। इसी तरह रैदास कहते हैं- 'प्रभुजी तुम चंदन हम पानी। अब कैसे छूटे राम नाम रट लागी...' यह रामत्व क्या है? राम के चरित्र में एक ऐसी सहजता, प्रेम, समानता की दृष्टि, अनुशासन का भाव और गंभीरता है जिसके चलते राम युगों-युगों से केवल युवकों के ही नहीं आबाल, वृद्ध, नारी सबके उपास्य बने हुए हैं, अनुकरणीय बने हुए हैं। डॉ उदय ने भारतीय संस्कृति पर हुए सम्मेलन में निबंधकार कुबेरनाथ राय के इस कथन का भी उल्लेख किया कि- 'जो राम है वही भारत है, जो भारत है वही राम है।'

गुप्ता ने कहा कि राम के त्याग और संघर्ष के बारे में बहुत कुछ लिखा गया है, चर्चा भी होती है, पर सीता की व्यथा को वह सम्मान, मान्यता नहीं



Kanak Rekha Chauhan



Anshu Mehra

मिली। आज के समाज में भी नारी के रोजमर्रा के संघर्ष को नजरअंदाज कर दिया जाता है? आप दोनों के विचार क्या हैं? विद्या जी का उत्तर था कि मैं लोक की विद्यार्थी हूँ। लोक में सीता के प्रति ज्यादा संवेदना दिखती है। यहां तक कि सीता के दूसरे वनवास को लेकर राम को कठघरे में खड़ा कर दिया जाता है। उन्होंने लोक में सीता के वनवास को लेकर इस आशय की कई लोक कथाओं को भी सुनाया। उदय प्रताप का कहना था कि हमारे चिंतन में राम और सीता को अलग करके नहीं देखा जाना चाहिए। उन्होंने अपने कथन की पुष्टि में आदि कवि वाल्मीकि का उल्लेख किया कि वे जब रामायण लिख रहे थे तो उन्होंने लिखा 'सीतायाः चरितम् महत्', लेकिन लिखते-लिखते उन्होंने राम का चरित्र भी लिख दिया। मैं इस चिंतन का समर्थक हूँ, जिसमें स्त्री-पुरुष मिलकर समाज का निर्माण करते हैं। उन्होंने श्री राम के चरित्र की विस्तार से चर्चा की और कहा कि केवल सीता से समाज नहीं बन सकता, केवल राम से समाज नहीं बन सकता। विद्या जी ने सीता-राम के प्रेम प्रसंग की भी बहुत रोचक चर्चा की और कहा कि इन कथाओं में इतनी करुणा और संवेदना है कि इन्हें अगर लोक तक ले जाया जाए तो देश से हिंसा खत्म हो सकती है। उदय प्रताप ने सनातन धर्म से जुड़े सवाल का उत्तर राम-कथा के प्रसंगों से दिया और कहा कि वे लोक में व्याप्त हैं, आज पूरा विश्व उन्हें अपना रहा है। वक्ताद्वय का अभिनेंदन अहसास वूमन मेरठ अंशु मेहरा ने किया।



A rapt audience listens

सीता केवल राम की संगिनी ही नहीं उनकी कीर्ति का हेतु भी



Meenakshi F. Paul



Asha Prabhat

“राम कथा सिर्फ आस्था और काव्य रचना का अनुशासन भर नहीं है। वस्तुतः इसे सीता-राम कथा कहा जाना चाहिए। सीता राम से अनन्य हैं। वे हमेशा इस सत्य को प्रतिपादित करती हैं कि मैं राम से विमुख नहीं हूँ। यही भाव राम कथा की मूल प्रेरणा है।” यह कहना है वरिष्ठ लेखिका आशा प्रभात का। वे अयोध्या में आयोजित ‘रामायण कला उत्सव’ के ‘रामकथा में जानकी का महत्त्व’ सत्र में अपने विचार व्यक्त कर रही थीं। इस सत्र में प्रभात और मीनाक्षी एफ पॉल से वार्ताकार की भूमिका कोरल दासगुप्ता ने निभाई। अहसास वूमेन मोनिका भगवागर ने स्वागत और धन्यवाद देने के साथ ही सत्र का परिचय दिया। उन्होंने कहा कि हमारे लोक में जगतजननी जानकी, श्री राम से पहले आती हैं। चाहे वह शिव धनुष हो, चाहे श्री राम का वनगमन, चाहे वह लंका में रावण के सामने अपने सतीत्व की रक्षा हो, या फिर अग्नि परीक्षा...जानकी जी राम कथा का आधार हैं। तुलसीदास जी तो श्री रामचरितमानस में यहां तक लिख देते हैं कि- ‘सिय राम मय सब जग जानी, करुं प्रनाम जोरि जुग



Koral Dasgupta



Monica Bhagwagar

पानी...’ ध्यान से सोचें कि यदि जानकी जी न होती तो क्या श्री राम की कथा ऐसी होती, जैसी अभी है?

अतिथिद्वय और संवादकर्ता का संक्षेप में परिचय देते हुए भगवागर ने बताया कि प्रभात हिंदी और उर्दू में समान रूप से लिखती हैं। आपकी 17 पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। दूसरी वक्ता पॉल अकादमिक, कवि, अनुवादक हैं। संवादकर्ता दासगुप्ता ने विविध विषयों पर लिख कर दुनिया भर में अपनी पहचान बनाई है। आप सती शृंखला की पांच-पुस्तकों पर भी काम कर रही हैं।

दासगुप्ता ने पहचान और एहसास की व्याख्या करते हुए दोनों वक्ताओं से सीता जी के बारे में जानना चाहा। पॉल ने कहा कि हिमाचल में जानकी एक पहाड़न लड़की हैं, एक पहाड़न बहू हैं। जो पहाड़ की औरतों की तरह ही जीवन व्यतीत करती हैं, और पहाड़ की औरतों की तरह ही उनके सारे क्रिया-कलाप रहते हैं। पहाड़ की औरतें बहुत संघर्षशील हैं। हिमाचल की लोक कथा और गद्य में जितनी भी बातें सीता के चरित्र के बारे में मिलती हैं, उनमें उनके जीवन में भी बहुत संघर्ष है। पर वे बहुत जुझारू और हर चीज में निपुण हैं। पर वे तेज जुबान की हैं और अन्याय कभी नहीं सहती हैं। यहां तक कि उनकी शक्ति से श्री राम भी उठ खड़े होते हैं। पॉल ने दशरथ जी की मृत्यु के बाद श्री राम के दुख से जुड़े लोक प्रसंग का उद्धरण देते हुए कहा कि पहाड़ में सीता शक्ति हैं और बहुत हद तक उनमें दुर्गा का चरित्र देखते हैं। वे घर बनाने वाली हैं और पति को अपने कर्तव्य की राह पर चलाने वाली हैं।

प्रभात ने कहा कि मैं सीतामढ़ी से आई हूँ। वह जानकी की उद्भवभूमि है। हमारे यहां जानकी को पुत्री भाव, बहन भाव से भी मानते हैं, इष्ट भी मानते हैं। वहां रामनवमी भी मनाई जाती है, जानकी नवमी भी मनाई जाती है। उन्होंने सत्र के विषय की प्रशंसा करते हुए वाल्मीकि रामायण

के हवाले से कहा कि राम जब विश्वामित्र के साथ बक्सर जाते हैं, तो राजकुमार होते हैं। ताड़का और सुबाहु का वध करते हैं तो उनकी प्रसिद्धि में कुछ उत्थान होता है। लेकिन जब वे बक्सर से आगे बढ़ते हैं, अहल्या से मिलते हैं, उन्हें सामाजिकता सिखाते हैं तो उनमें एक अलौकिकता आती है। जनकपुर पहुंच कर शिव-धनुष तोड़ने के साथ ही उनकी प्रसिद्धि पूरे भारतवर्ष में पहुंच जाती है। प्रभात ने राम-सीता के वनगमन का विस्तार से वर्णन किया और कहा कि दंडकारण्य में अगर तेरह वर्ष बाद सीता का हरण नहीं होता तो राम मर्यादा पुरुषोत्तम नहीं बनते। उन्होंने राम-कथा के अनेक प्रसंगों के साथ कहा कि सीता केवल राम की संगिनी ही नहीं उनकी कीर्ति का हेतु भी थीं।

दासगुप्ता ने कहा कि अयोध्या के लक्ष्मणगढ़ी मंदिर में हर जगह सियाराम, सीता राम लिखा हुआ है। हमारी परंपरा में हमेशा सीताराम ही रहे, पर बाद में शायद पुरुष सत्तात्मक समाज ने उसे बदल दिया। मैं सीता के परिचय के बाद उनसे जुड़े आप दोनों के एहसास के बारे

में जानना चाहती हूँ? पॉल ने कहा कि श्री राम के नाम के साथ जो 'श्री' है, वह देवी है। इसलिए अगर वह श्रीराम है, तो भी सियाराम ही है। उन्होंने कहा कि सीता द्वारा बचपन में शिव धनुष हटाने की कहानी हमें बहुत प्रेरित करती है। उन्होंने राम कथा में स्थानीय बोली की इस कहानी को भी प्रेरणादायक बताया कि सीता जी चाहती थी कि उनका हरण हो, ताकि रामजी जिस लिए आए हैं, वह हेतु पूरा हो। पॉल ने विस्तार से वह कहानी सुनाई और कहा कि पहाड़ों में सीता की अग्निपरीक्षा की बात उतनी नहीं होती पर कहा जाता है कि आग भी उनका कुछ बिगाड़ नहीं सकती। उन्होंने अग्नि से जुड़ी लोककथा सुनाते हुए कहा कि पहाड़ी कथाओं में सीता कभी नहीं रोतीं।

प्रभात ने कहा सीता को लोक मुख से जितना जाना गया, उतना साहित्य से नहीं जाना गया। हमारे यहां महिलाएं सीता की व्यथा पर रोती भी हैं और उससे ढांडस भी पाती हैं। उन्होंने कहा कि लड़कियां कहती

हैं कि मैं सीता नहीं बनना चाहती। सच तो यह है कि तुम सौ जन्मों में सीता नहीं बन सकती। उन्होंने अग्निपरीक्षा से जुड़े प्रसंग को विस्तार से बताया। उन्होंने कहा आज भी सीता दृष्टांत के तौर पर क्यों कही जाती हैं? आज भी मिथिला में विवाह पंचमी के दिन शादी नहीं होती और अयोध्या की तरफ मुंह नहीं करते। सीतामढ़ी में सीता को लेकर बहुत विरल भाव है। हमारी पहचान सीता से है। संवाद के दौरान पॉल ने साहित्य, दर्शन, इतिहास, धर्म और अध्यात्म के संदर्भ में सीता जी पर अपने विचार बताए, तो प्रभात ने अपनी पुस्तकों के हवाले से भी लोक, भाव और संस्कृति के संदर्भ में राम कथा का विस्तार से उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि राम मिथक नहीं हैं। वे ऐतिहासिक पुरुष हैं। हम अपने इतिहास से कट गए हैं। उन्होंने सीता के जन्म और लक्ष्मण रेखा से जुड़ी कथा भी सुनाई। अतिथि वक्ताओं ने दर्शकों के सवाल-जवाब के भी उत्तर दिए। वक्ताद्वय और संवादकर्ता का अभिनंदन **अहसास** वूमेन पटना अन्विता प्रधान ने किया।



Vedula Ramalakshmi



Anvita Pradhan

हमारे तो एक तुमहीं हो मोहन, तुम्हरे लाख करोड़... देव प्रसाद पाण्डेय की कर्णप्रिय भजन प्रस्तुति



Dev Prasad Pandey performs with his team of musicians

नीलाम्बुज श्यामल कोमलांगम सीतासमारोपित वामभागम्
पाणौ महासायकचारुपापं नमामि रामं रघुवंशनाथम्।
यस्यांके च विभाति भूधरसुता देवापगा मस्तके
भाले बालविधुर्गले च गरलं यस्योरसि व्यालराट्।
सोऽयं भूतिविभूषणः सुरवरः सर्वाधिपः सर्वदा

शर्वः सर्वगतः शिवः शशिनिभः श्री शंकरः पातु माम्।... 'रामायण कला उत्सव'
के दूसरे दिन के प्रथम सत्र का आरंभ कलाकार देव प्रसाद पाण्डेय द्वारा श्री रामचरित
मानस के इस समधुर श्लोक से हुआ। उन्होंने इसके पश्चात

श्री रामचन्द्र कृपालु भजुमन
हरण भवभय दारुणं....
नव कंज लोचन कंज मुख
कर कंज पद कंजारुणं।
कन्दर्प अगणित अमित छवि
नव नील नीरद सुन्दरं।
पटपीत मानहुँ तडित रुचि शुचि
नोमि जनक सुतावरं
श्री रामचन्द्र कृपालु भजुमन
हरण भवभय दारुणं....

इस सुबह पाण्डेय की दूसरी प्रस्तुति श्री कृष्ण भजन था। जिसमें उन्होंने अवध
और गोकुल का समन्वय स्थापित किया और सुनाया- गोकुल में बाजे बधाई जन्म
लियो हैं रघुराई...

अवध में बाजे बधाई जन्म लियो हैं रघुराई...
दौड़ी-दौड़ी बांदी आई, दशरथ जी को खबर जनाई
मोतियन हार निछावर पाई, राजमहल में खुशियां छाई
मंगल गान सुहाई, मंगल गान सुहाई
जन्म लियो हैं रघुराई, जन्म लियो हैं रघुराई...
भजन सत्र में पाण्डेय ने लोक संगीत की प्रस्तुतियां भी दी, जिनके बोल थे-
कागा सब तन खड़यो, चुन-चुन खड़यो मांस;

दो नैना मत खड़यो, इन्हें पिया मिलन की आस...

हम चितवत तुम चितवत नाहीं, ओ बालम चितचोर
नयन दोऊ हमरे तोहरी ओर, नयन दोऊ हमरे तोहरी ओर...
तुम तो चंदा, जगत उजियारे; तुम तो चंदा, जगत उजियारे...
मैं बन बैठी चकोर, नयन दोऊ हमरे तोहरी ओर...
तोहरी ओर...तोहरी ओर...
हमरे तो एक तुमहीं हो मोहन, तुम्हरे लाख करोड़...
नयन दोऊ हमरे तोहरी ओर, नयन दोऊ हमरे तोहरी ओर...

कार्यक्रम की शुरुआत में प्रभा खेतान फाउंडेशन और आयोजकों की ओर से
अहसास वूमन लखनऊ दीपा मिश्र ने सभी अतिथियों का स्वागत किया। उन्होंने
बहुविध संस्कृति, भाषा, संगीत, साहित्य, शिक्षा, दृश्य कला, नृत्य, नाटक, मौखिक
परंपरा और पारंपरिक प्रथाओं को लेकर फाउंडेशन की गतिविधियों की चर्चा की और
बताया कि इसे श्री सीमेंट लिमिटेड का संरक्षण प्राप्त है। फाउंडेशन प्रतिष्ठित उपक्रमों,
सहयोगियों और अहसास वूमन की सहायता से 'कलम', 'किताब', 'लफ़्ज़', 'एक
मुलाकात विशेष', 'द राइट सर्कल', 'सुर और साज', 'आखर' और 'पोथी' जैसे
अनेक कार्यक्रम भी आयोजित करता है। उन्होंने बताया कि 'रामायण कला उत्सव'
के दौरान प्राचीन भारतीय सभ्यता, महान संस्कृति और लोकजीवन में व्याप्त, हमारी
आस्था के प्रतीक, आदर्श, मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम; उनके जीवन पर आधारित
ग्रंथ; श्री राम कथा और उनके पात्र; श्री राम चरित और श्री रामायण की उपस्थिति
आदि की चर्चा होगी।

मिश्र ने शास्त्रीय गायक और वादक देवप्रसाद पाण्डेय का भी परिचय दिया और
बताया कि आप अंतर्नाद संगीत संस्थान के सचिव और नटराज संगीत महाविद्यालय
के व्यवस्थापक हैं। तुमरी, गजल, भजन, भोजपुरी, अवधी तथा पारंपरिक गीतों के
पारखी गायक पाण्डेय ने चलो मन गंगा तीर, शिल्प मेला, हरिद्वार महाकुंभ संगीत
समारोह, रामायण मेला, कपिलवस्तु महोत्सव और बलराम पुर महोत्सव के अलावा
आकाशवाणी और दूरदर्शन केंद्रों पर भी प्रस्तुतियां दी हैं। तबले पर उनके साथ
संगत दी स्वामी पागलदास जी महाराज के शिष्य राजकुमार झा ने और सारंगी पर
थे भातखण्डे संगीत संस्थान में सारंगी के शिक्षक पंडित राकेश मिश्र ने। अंत में
आयोजकों की ओर से अहसास वूमन प्रयागराज श्रुति अग्रवाल ने कलाकारों का
अभिनंदन किया।



Deepa Mishra



Vedula Ramalakshmi



Anvita Pradhan



Ramasharan Awasthi



Kanak Rekha Chauhan



Shraddha Murdia

में कैकेयी

पौराणिक महिला पात्रों पर अपने एकल मंचन के लिए देश भर में चर्चित कलाकार अंजना चांडक ने अयोध्या में 'रामायण कला उत्सव' के दौरान अपना एकल नाट्य 'में कैकेयी' प्रस्तुत किया। चांडक इस प्रस्तुति के माध्यम से बताती हैं कि अयोध्या की छोटी रानी कैकेयी अपने में समेटे हैं- एक दुष्ट सौतेली मां, एक धूर्त पत्नी, एक ईर्ष्यालु सौत, और अति उत्साही मां... वे युगों-युगों से इन सभी नामों के साथ इन चरित्रों का खामियाजा भुगतती आ रही हैं। पर सही और गलत दृष्टिकोण का विषय है- और यह समय और स्थितियों के साथ बदलता रहता है। क्या पाखंड मातृत्व का एक अनिवार्य हिस्सा है? ब्लैक & व्हाइट वाले इस दौर में कैकेयी के चरित्र को ग्रे शेड्स के साथ फिर से देखना क्यों महत्वपूर्ण है? इसका उत्तर ग्रंथों में नहीं, बल्कि स्वयं कैकेयी के भीतर है। इसलिए चांडक कैकेयी को, उसके अपने पक्ष में बोलते हुए, उसकी परत-दर-दरत कहानी अपने मोनोड्रामा 'में कैकेयी' के माध्यम से प्रस्तुत करती हैं। झलकियां



Anjana Chandak's performance as Kaikeyi

राम का नायकत्व लोक मंगल से जुड़ा है, इसीलिए अमर है



Udai Pratap Singh

“राम एक ऐसा शब्द है जो हमारी मनीषा में अनादि काल से चला आ रहा है। आप वेदों को देख लीजिए, प्रसंग बदल सकते हैं, कथा बदल सकती है, पर वे वेदों में, उपनिषदों में, ब्राह्मण ग्रंथों, काव्यों-महाकाव्यों में, लोक जीवन में व्याप्त है। आखिर वे क्यों आते हैं।” यह कहना है वरिष्ठ लेखक डॉ उदय प्रताप सिंह का। वे अयोध्या में आयोजित ‘रामायण कला उत्सव’ के ‘Retelling the Ramayana over centuries’ यानी ‘सदियों से रामायण का पुनर्कथन’ सत्र में अपने विचार व्यक्त कर रहे थे। इस सत्र में वार्ताकार की भूमिका अहसास वूमेन लखनऊ कनक रेखा चौहान ने निभाई। अहसास वूमेन पटना अन्विता प्रधान ने स्वागत और धन्यवाद वक्तव्य के साथ ही सत्र का परिचय दिया।

चौहान ने कहा कि वाकई श्री राम कथा कब शुरू हुई? सतयुग में, भगवान श्री शंकर के मुख से, काग भुसुंडि जी से, गरुड़ जी से, याज्ञवल्क्य जी से या फिर महर्षि वाल्मीकि जी और तुलसीदास जी से? राम कथा अपने गुण और कथा की तरह ही अछोर है। इसका स्वरूप क्या है और यह कब से है? अतिथि वक्ता का परिचय देते हुए उन्होंने बताया कि भक्ति साहित्य पर 23 से अधिक पुस्तकों के लेखक डॉ सिंह हिंदुस्तानी एकेडमी प्रयागराज के पूर्व अध्यक्ष हैं। आपने संत साहित्य पर विशेष काम किया है। आपने कई बार विश्व रामायण सम्मेलन और विश्व हिंदी सम्मेलन में भारतीयता, रामकथा और भारतीय संस्कृति की पताका फहराई है। एक निबंधकार के रूप में ख्यात डॉ सिंह ने 17 से अधिक पुस्तकों का संपादन भी किया है। संत साहित्य और राम साहित्य के विशेषज्ञ के रूप में आप राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठियों में



Kanak Rekha Chauhan

शामिल होते रहे हैं और अनेक पुरस्कारों सम्मानित हैं।

चौहान ने कहा कि हम सत्र के विषय को काल, भाषा और भूगोल किसी के भी अनुसार बांट सकते हैं। भारतीय संविधान की अनुसूची में ही 22 भाषाएं हैं। भाषा के मुद्दे पर हम बंटे हुए हैं, पर जैसा कि अनंतमूर्ति जी ने कहा है कि हिंदुस्तान के किसी भी प्रांत में आप चले जाएं, जो दो भाषाएं सभी लोग बोलते हैं, समझते हैं, वह है रामायण और महाभारत। संस्कृत, प्राकृत, तमिल, तेलुगु, असमिया, बंगाली, ओड़िया, मराठी, कन्नड़, अवधी, हिंदी, मलयालम, गुजराती, पंजाबी, फारसी सहित भारत की विविध भाषाओं में लिखे रामायण

का उल्लेख करते हुए चौहान ने सिंह से पूछा कि आप इन्हें किस रूप में देखते हैं? सिंह ने कहा कि रामचरित युग-युगों से लिखा जा रहा है, विभिन्न भाषाओं में लिखा जा रहा है, विभिन्न समयों में लिखा जा रहा है, विभिन्न कवियों- लेखकों द्वारा लिखा जा रहा है, सामाजिक विश्लेषकों द्वारा उसका विश्लेषण हो रहा है। आखिरकार में वह कौन सा तत्व है, जिसके चलते इसे लिखा गया।

सिंह ने कहा कि विश्व में तमाम विचारधाराएं हैं। मार्क्सवाद है, दक्षिणपंथ है, मध्यम पंथ है। लेकिन कोई भी विचारधारा ऐसी नहीं है, जो राम के समान नायक खोज सकी हो। हमारे देश की सामाजिक व्यवस्था का गठन जातियों के वर्गीकरण के आधार पर हुआ है। इनमें से हर जाति में राम नाम मिलता है। हजारों हजार, लाखों लाख नाम मिलते हैं। राम केवल अभिजात्य वर्ग के नहीं हैं। वे राजा और राजकुमार भर नहीं थे। उन्होंने कहा कि लोक जीवन में राम न तो मार्क्सवाद के विरोध में आते हैं, न ही दक्षिणपंथ की स्थापना करने आते हैं। मनुष्यता का सृजन ही साहित्य का सबसे बड़ा उद्देश्य है। साहित्य अगर इससे भटक जाता है तो वह साहित्य नहीं है। इसलिए राम अनंत काल से चले आ रहे हैं। 'हरि अनंत, हरि कथा अनंता' की तरह राम हर जगह हैं। राम की व्यापकता शताब्दियों के पहले से है। राम में समानता का भाव, बंधुता का भाव, प्रेम का भाव, लोकतांत्रिक ढंग से मर्यादित व्यवहार का भाव, अनुशासनप्रियता का भाव सभी मिलते हैं। राम का संघर्ष वन में तब शुरू होता है, जब वे वन में राक्षसों द्वारा मारी गई ऋषियों की हड्डियां देखते हैं। वहां वे कहते हैं- 'निसिंघर हीन करउँ महि, भुज उठाइ पन कीन्ह'। यह जो लोक नायकत्व है, वह लोक मंगल से जुड़ा है। सिंह ने कहा कि जो नायकत्व लोक मंगल से जुड़ा नहीं होगा वह जातीय स्मृतियों में जीवित नहीं रह सकता।

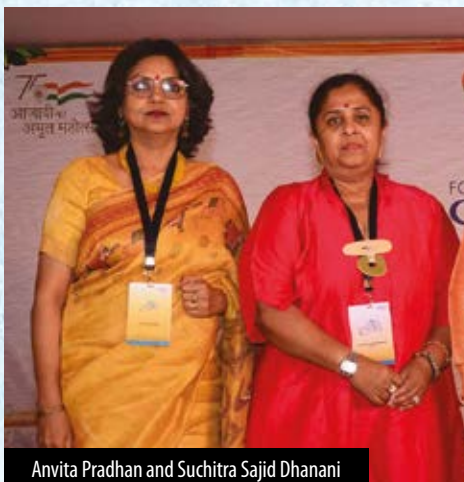
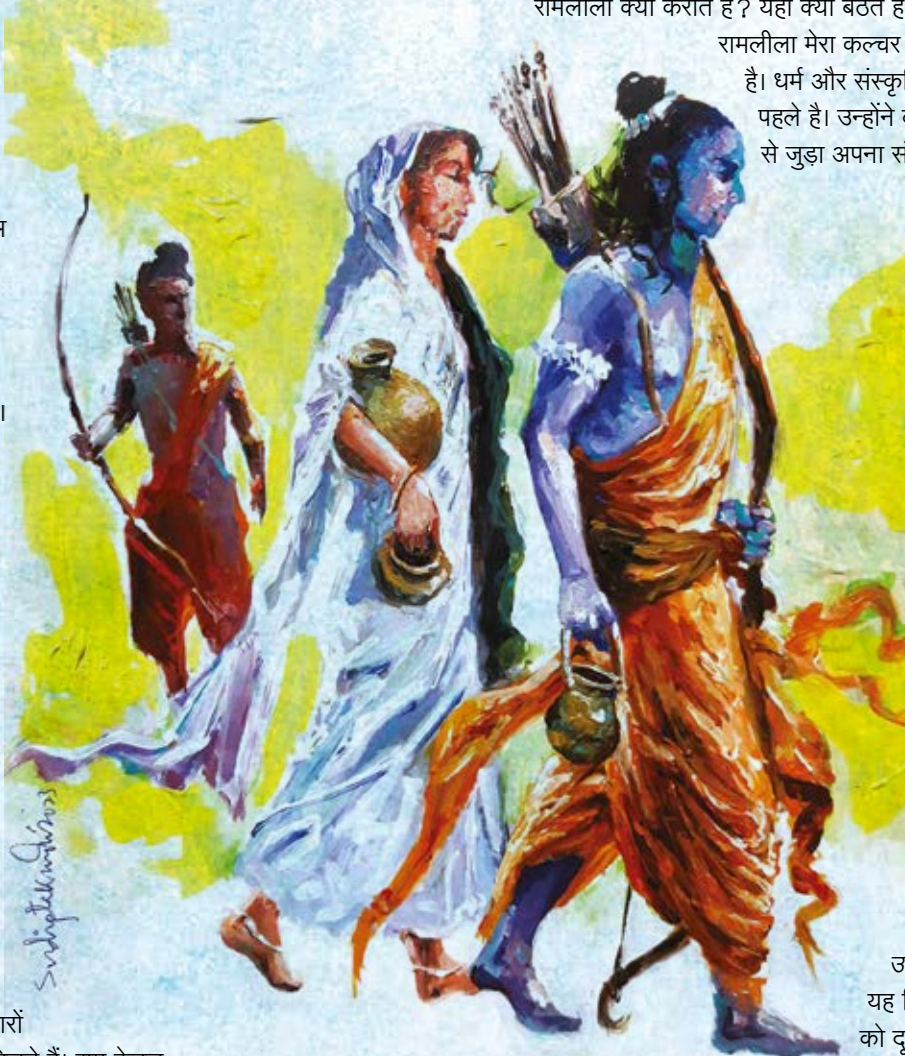
चौहान ने *My God is a Woman* की लेखिका नूर जहीर का एक संस्मरण सुनाया कि जब उन्होंने इस पुस्तक लेखन के शोध के दौरान

इंडोनेशिया की यात्रा की तो एक मौलाना से पूछा कि आप मौलाना होकर रामलीला क्यों कराते हैं? यहां क्यों बैठते हैं? तो उनका उत्तर था कि रामलीला मेरा कल्चर है और इस्लाम मेरा धर्म है। धर्म और संस्कृति का समन्वय *रामायण* में पहले है। उन्होंने बचपन में देखी गई रामलीला से जुड़ा अपना संस्मरण भी सुनाया। चौहान

ने *वाल्मीकि रामायण* से जुड़ी एक श्रुति भी सुनाया कि कैसे महर्षि नारद ने उन्हें *हनुमंत रामायण* से उन्हें रूबरू कराया और जब उसके काव्य की उत्कृष्टता से वाल्मीकि जी निराश हो गये, तो हनुमान जी ने न केवल उसे नष्ट कर दिया, बल्कि यह भी कहा कि मैंने राम कथा स्वांतःसुखाय लिखी थी। भाव से लिखी थी और आपने प्रभाव से लिखी है। चौहान ने सिंह से उनका मत जानना चाहा। सिंह ने तुलसीदास जी के दोहे- 'रामकथा सुंदर कर तारी। संसय बिहग उड़ावनिहारी।' इसका अर्थ यह कि राम कथा आपके संशय को दूर करता है। रामलीला भी वही करती है।

सिंह ने वाराणसी में तुलसीदास जी के युग में मेधा भगत द्वारा शुरू की गई रामलीला का उल्लेख किया। उन्होंने बताया कि कैसे काशी नरेश के खोए पुत्र के सुबह तक लौट आने की जानकारी तुलसीदास जी ने *राम शलाका प्रश्न* से दे दी, और उनसे मिले बारह सौ रुपयों के दान से बारह हनुमत विग्रहों की स्थापना की। राम कथा कैसे शुरू हुई, उसमें क्या चुंबकीय तत्व है, क्या

आकर्षण है, इसे कोई नहीं जानता। उन्होंने श्री राम द्वारा परिवार से अधिक धर्म को महत्त्व देने से जुड़े सवाल का उत्तर दिया और युवाओं में राम कथा की लोकप्रियता पर प्रसन्नता जाहिर की। राम के लौकिक स्वरूप और अलौकिक स्वरूप का उल्लेख करते हुए उन्होंने रसिक संप्रदाय की जानकारी भी दी। चौहान ने सीता-राम के रस प्रसंग से जुड़ा होली गीत सुनाया। सिंह ने दर्शकों के सवाल का भी उत्तर दिया और उर्दू सहित भारतीय भाषाओं में लिखे भक्ति साहित्य के बारे में बताया। वक्ता सिंह का अभिनंदन *अहसास वूमैन इंदौर* सुचित्रा साजिद धनानी ने किया।



Anvita Pradhan and Suchitra Sajid Dhanani

आधुनिकता ने समाज में अच्छी चीजों के साथ ही सर्वग्रासी संकट पैदा किए



Badri Narayan

Anant Vijay

“यह हमारा कलुष है, जिससे राम कथा कलुषित दिखाई पड़ती है। यह राम कथा का दोष नहीं है। वाकई राम कथा में एक इतना बड़ा चरित्र है, जो आधुनिकता के संदर्भ में, आधुनिकता के संकटों से भी मुक्त होने में मदद कर सकता है। उस समय का जो समरस समाज है, वह आज की भी जरूरत है।” यह कहना है वरिष्ठ लेखक बद्रीनारायण का। वे अयोध्या में आयोजित ‘रामायण कला उत्सव’ के ‘आधुनिक संदर्भ में रामायण’ सत्र में अपने विचार व्यक्त कर रहे थे। इस सत्र में नारायण के साथ लेखिका कोरल दासगुप्ता ने अपने विचार रखे। वरिष्ठ पत्रकार और स्तंभकार अनंत विजय ने वार्ताकार की भूमिका निभाई। अहसास वूमेन निधि गर्ग ने स्वागत और धन्यवाद वक्तव्य के साथ सत्र और अतिथि वक्ताओं का भी परिचय दिया। उन्होंने कहा कि हम सभी यह जानते हैं श्री राम कथा आदर्श के साथ-साथ प्रेम, त्याग, मर्यादा की भी गाथा है। इस सत्र में विद्वान वक्ता आधुनिक संदर्भ में रामायण, रामकथा, कहां कितनी प्रभावी है, किस जगह किस रूप में प्रचलित और व्याप्त है, कहां कितनी प्रासंगिक है पर राय रखेंगे।

अतिथि वक्ताओं का परिचय देते हुए उन्होंने बताया कि हिंदी और अंग्रेजी में समान रूप से लिखने वाले बद्रीनारायण ने सार्वजनिक जीवन में धर्म की भूमिका और उसके राजनीतिक आशयों पर गंभीरतापूर्वक काम किया है। आप एक संवेदनशील कवि भी हैं और साहित्य अकादेमी पुरस्कार सहित कई पुरस्कारों से सम्मानित हैं। वे वर्तमान में गोविन्द बल्लभ पंत सामाजिक विज्ञान संस्थान, प्रयागराज में प्रोफेसर और निदेशक हैं। कोरल दासगुप्ता ने जेंडर



Korla Dasgupta

स्टडीज, कला, मिथक और पारिस्थितिकी जैसे कथेतर अकादमिक पुस्तकों से विश्वव्यापी ख्याति अर्जित की है। आप पैन मैकमिलन के साथ सती शृंखला की पांच-पुस्तकों पर काम कर रही हैं; जो भारतीय पौराणिक कथाओं की पंचकन्या की कहानियों का पुनर्पाठ है। संवादकर्ता विजय ढाई दशक से भी अधिक समय से पत्रकारिता में हैं। आपकी अब तक ग्यारह पुस्तकें प्रकाशित हो



Nidhi Garg



Dimple Trivedi



Malika Varma



Shraddha Murdia



Anubha Arya

चुकी हैं। सिनेमा पर सर्वोत्कृष्ट लेखन के लिए राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार 'स्वर्ण कमल' सहित कई अन्य पुरस्कारों से सम्मानित विजय दैनिक जागरण में एसोसिएट एडिटर हैं।

विजय ने सत्र की भूमिका को स्पष्ट करते हुए कहा कि अंग्रेजी की संवेदना से भारतीय संस्कृति और पौराणिक आख्यानों को नहीं समझ सकते। उन्होंने शंबूक वध से जुड़ी भ्रांति और तथ्यों पर नारायण की राय जाननी चाही। नारायण ने कहा कि जिस समय में राम थे उस समय न तो जातियां इस तरह की थीं, न ही जाति भेद इतना था। आज समाज बदल चुका है और भारतीय मानस की आदत हो चुकी है कि वह हर बात को जातीय दृष्टिकोण से देखने लगता है। यहां तक कि पिछले दिनों तुलसी जैसे कवि को भी जातीय खांचे में डाल दिया गया। शंबूक या ऐसी ही दूसरी कई घटनाएं वाचिक रूप में या फिर प्रक्षिप्त रूप में मूल कृतियों के साथ जोड़ दी गईं। यह 'लोक राम कथा' का हिस्सा नहीं है, बल्कि यह 'बौद्धिक राम कथा' का हिस्सा है, जिसे लेखों और विमर्शों के बीच रखा गया। यह जातिगत राजनीति, दलगत राजनीतिक जुड़ाव के चलते भी हो सकता है। जातिभाव जो आधुनिकता की देन है, उस आधुनिकता ने हमारे समाज में बहुत सी अच्छी चीजों के साथ बहुत सर्वग्रासी संकट पैदा किए हैं। इस आधुनिकता ने लोकतंत्र के साथ जुड़ कर उसके नकारात्मक पक्ष को बहुत मजबूत किया है, जिसकी एक भाव जाति भी बोध है उन्होंने डॉ राम मनोहर लोहिया के राम कथा से प्रेम और रामायण मेला को भी याद किया और इस बात पर जोर दिया कि यह हमारी जिम्मेदारी है कि हम उसका सही पाठ करें।

विजय ने दासगुप्ता से राम कथा को लेकर समाज, विशेषकर युवाओं के मन में फैल रही भ्रांति और बौद्धिक वर्ग से उसका प्रतिकार न होने को लेकर उनका मत जानना चाहा। दासगुप्ता का उत्तर था कि सीता हो या द्रौपदी उनके चरित्रों को सालों-साल से हाशिए पर रखा गया। ये सारी कहानियां हमारे पूर्वजों द्वारा हम तक पहुंची थी। फिर भी इन पौराणिक चरित्रों को आज तक खत्म नहीं किया जा सका। मैं भले ही ऐसी बातों का समर्थन नहीं करती पर मानती हूँ कि जो लोग भले ही बिना किसी शोध, तर्क या जानकारी के प्रश्न उठाते हैं, उससे यह साबित होता है कि उनके मन में पौराणिकता को लेकर जिज्ञासा तो है। मैं आंदोलनकारियों की बात नहीं कर रही। विजय ने नारायण से पूछा कि श्री राम के आदर्शों को लेकर जो भ्रांतियां फैलाई जा रही हैं, उसे लेकर किस तरह का काम किया जाना चाहिए? क्या यह अकादमिक स्तर पर होना चाहिए, या सामाजिक स्तर पर होना चाहिए? क्योंकि राजनीति से हमें कोई उम्मीद नहीं है।

नारायण ने प्रश्न की तारीफ की और कहा कि ये भ्रांतियां पढ़े-लिखे, बौद्धिक समाज की हैं। नागर लोक समूह की है। हमारे अशिक्षित और गंवई समाज की कोई भ्रांति नहीं है। मैंने चार दशकों के बीच दलित और पिछड़े समाज के बीच काम किया है, मेरी समझदारी यह है कि सबसे अधिक राम कथा और राम संस्कृति वंचित समाज के बीच भी है। आप गांवों में होने वाली रामलीला का अध्ययन कर इसे जान सकते हैं। उन्होंने कहा कि भारतीय समाज कथा में जीता है। गंवई जीवन में काव्य शक्ति से अधिक प्रभावी कथा शक्ति है। इन कथाओं में सबसे बड़ी कथा राम की कथा है। पं मदन मोहन मालवीय की इस इच्छा कि गांव-गांव में विद्या शाला, मल्ल शाल और कथा शाला का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि आने वाली पीढ़ी तक हमें कौन सी कथा पहुंचानी है, यही हमारी चुनौती है। हमें समाज को प्रेरित करने वाली कथा परंपरा विकसित करनी होगी, जो मानवीय महानता को विकसित करे।

दासगुप्ता ने कहा कि रामायण और महाभारत जैसे ग्रंथ केवल मनोरंजन के लिए नहीं लोगों को प्रेरित करने के लिए लिखे गए थे कि इन्हें पढ़कर आप अपना रास्ता चुन सकें। उन्होंने इन कथानकों से जुड़ी महिला पात्रों को लेकर अपना मत रखा। नारायण और दासगुप्ता ने इन गाथाओं में स्त्री-पुरुष पात्र, समरस समाज की भावना, इसमें निहित दर्शन, चिंतन और विचार पर विस्तार से अपनी बात रखी और सवाल-जवाब सत्र में दर्शकों के सवाल के उत्तर दिए। वक्ताद्वय और संवादकर्ता का अभिनंदन अहसास वूमन पटना अनुभा आर्य ने किया।

रामायण और महाभारत की भावभूमि में 'युद्ध और कूटनीति' है



Anand Neelakantan

Anant Vijay

Manoj Rajan Tripathi

“राम जी इन दिनों बहुत आक्रामक दिखने लगे हैं। मैं मंदिरों के नगर से आता हूँ। हमारे यहां राम कभी अकेले नहीं दिखते। मान्यता है कि राम का अकेले दिखना देश के लिए बहुत खराब होता है। राम को हमेशा सीता, लक्ष्मण और हनुमान के साथ दिखना चाहिए।” यह कहना है चर्चित लेखक आनंद नीलकंठन का। वे अयोध्या में आयोजित ‘रामायण कला उत्सव’ के ‘War & Diplomacy in Ramayan’ यानी ‘रामायण में युद्ध और कूटनीति’ विषय पर केंद्रित सत्र में विचार व्यक्त कर रहे थे। इस सत्र में नीलकंठन के साथ वरिष्ठ पत्रकार और स्तंभकार अनंत विजय ने अपने विचार रखे। वार्ताकार की भूमिका निभाई पत्रकार लेखक मनोज राजन त्रिपाठी ने। अहसास वूमेन सुचित्रा धनानी ने स्वागत और धन्यवाद वक्तव्य के साथ सत्र और अतिथियों का परिचय दिया। उन्होंने कहा कि अगर हम श्री राम कथा को देखें तो यह युद्ध और कूटनीति का अद्भुत आख्यान है। यह केवल धर्म और अधर्म के बीच का युद्ध भर नहीं, बल्कि आर्य और रक्ष संस्कृति, और कहीं न कहीं दो जीवन मान्यताओं के बीच युद्ध की भी गाथा है। इसके महान पात्रों के बीच केवल श्री राम या राक्षसराज रावण ही नहीं, महाबली हनुमान, बाली-सुग्रीव और मेघनाद भी हैं। वाकई यह किस तरह का युद्ध था और इसमें किस तरह से कूटनीति ने अपनी भूमिका निभाई, इस सत्र में यही चर्चा होनी है।

अतिथियों का संक्षेप में परिचय देते हुए उन्होंने बताया कि पौराणिक लेखन के लिए चर्चित नीलकंठन की अंग्रेजी में 12 और मलयालम में 1 पुस्तक प्रकाशित हुई है। ‘असुर: टेल ऑफ़ द विनक्रिश्ड’ की दस लाख से अधिक प्रतियां बिक चुकी हैं और आप फोर्ब्स इंडिया द्वारा ‘भारत की 100 शीर्ष शख्सियत’ में शुमार रहे हैं। विजय पत्रकारिता के क्षेत्र का जाना-माना नाम हैं। आपकी अब तक ग्यारह पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। पुस्तक ‘अमेठी संग्राम’ के कई संस्करण आ चुके हैं और यह हिंदी के अलावा अंग्रेजी में भी प्रकाशित है। आप सिनेमा पर सर्वोत्कृष्ट लेखन के लिए राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार ‘स्वर्ण कमल’ सहित कई पुरस्कारों से सम्मानित हैं और वर्तमान में दैनिक जागरण में एसोसिएट एडिटर हैं। संवादकर्ता त्रिपाठी तकरीबन तीस साल से पत्रकारिता में हैं और फिल्म ‘अतिथि तुम कब जाओगे-पार्ट टू (गेस्ट इन लंडन)’ के डायलॉग राइटर भी हैं। आपने कई अवॉर्ड जीते हैं। जी मीडिया में एडिटर हैं और CODE काकोरी नामक उपन्यास के लेखक भी हैं।



Suchitra Sajid Dhanani

त्रिपाठी ने कहा कि आज की जेनरेशन इंस्टा जेनरेशन है। इस उत्सव के दौरान संवाद सुनकर मेरे दिमाग में यह बात आई कि आज की जेनरेशन कैसे समझेगी हर दोहे को, हर चरित्र को? मुझे समझ में आया कि जैसे मुन्नाभाई केमिकल लोचा करते हुए गांधी को समझाता है, तो उसे बात समझ में आती है, या लगान का भुवन क्रिकेट टीम बनाकर अंग्रेजों से लड़ता है, तो उसे समझ में आता है कि हां अंग्रेजों के विरुद्ध लड़ाई हुई कैसे होगी। त्रिपाठी ने बड़े ही सुर में 'दुनिया में तेरा है बड़ा नाम, आज मुझे भी तुझसे पड़ गया काम...' गीत गाते हुए से अंगद, बाली, रावण के उल्लेख के साथ विजय से पूछा कि क्या 'रामायण में वार एंड डिप्लोमेसी' जैसी कोई चीज थी? विजय का कहना था कि आप वार और डिप्लोमेसी के बारे में पूछ रहे तो मैं आपको बता दूँ कि रामायण और महाभारत, हमारे ये दो ग्रंथ ऐसे हैं जो दुनिया के किसी भी क्राइम थ्रिलर को पानी पिला सकते हैं। इनमें युद्ध तो है ही, डिप्लोमेसी भी है। आखिर विश्वामित्र जब राजा दशरथ से साधु-संतों की रक्षा के लिए उनके पुत्रों को मांगते हैं, तो केवल राम और लक्ष्मण को ही क्यों मांगते हैं? भरत और शत्रुघ्न को क्यों नहीं मांगते हैं? इन दोनों ग्रंथों की भावभूमि 'युद्ध और कूटनीति' है।

त्रिपाठी ने नीलकंठन से पूछा कि आखिर राम ने बाली को छिप कर क्यों मारा? नीलकंठन का उत्तर था, "यह शुद्ध रणनीति थी। जब हम रामायण और महाभारत को पढ़ते हैं, तो हमें उससे जो सीखना चाहिए, और जिसे हम भूल जाते हैं कि युद्ध में कुछ भी हो सकता है। चाहे जो भी पक्ष हो, युद्ध जीतना ही उसका लक्ष्य है। हम रामायण और महाभारत को मूल रूप से नहीं पढ़ते हैं। दक्षिण के कुछ राजघरानों ने इन्हें

मौलिक रूप से पढ़ा था, इसीलिए वे कभी हारे नहीं।" हालांकि मेरे इस बयान की आलोचना की जा सकती है, लेकिन यह सत्य है कि युद्ध में बहुत सारे राजा केवल अपना वचन निभाने के चलते मारे गये। मोहम्मद गोरी और महमूद गजनवी की लड़ाई में उत्तर भारत के राजाओं की युद्धनीति से शुरु कर डचों से युद्ध में त्रावणकोर के राजा मार्तंड वर्मा अपनाई गई रणनीति की विस्तार से चर्चा करते हुए नीलकंठन ने बताया कि वर्मा और उनके दीवान ने वही रणनीति अपनाई जो रामायण और महाभारत में अपनाई गई थी। उन्होंने टीपू सुल्तान द्वारा त्रावणकोर पर हमले के दौरान धर्मराज राम वर्मा और राजा केशवदास पिल्लई द्वारा अपनाई गई रणनीति का भी विस्तार से उल्लेख किया और कहा कि युद्ध में जीतना ही उद्देश्य होता है। धर्म हमेशा सामयिक होता है, संपूर्ण धर्म जैसी कोई चीज नहीं होती।

विजय ने मर्यादा में कूटनीति से जुड़े सवाल का उत्तर देते हुए कहा कि आप इसे तुलसीदास के रामचरित मानस की दृष्टि से ही देखें और मानें कि गोस्वामी जी ने पहले दिन से राम की मर्यादा का ध्यान दें। चाहे धनुष भंग हो, वन गमन या बाली वध, तुलसी को पहले दिन से ही पता था कि हमें हर स्थिति, परिस्थिति, कूटनीति और युद्ध में अपने मुख्य चरित्र का आदर्श स्थापित करना है। नीलकंठन ने कहा कि हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि तुलसीदास जी ने रामचरित मानस तब लिखी थी, जब देश पर बाहरी लोगों का राज था। हम एक पराजित सभ्यता थे। इसीलिए उन्होंने सीता सहित महिलाओं का चरित्र वैसे ही गढ़ा। उन्होंने कहा कि वाल्मीकि रामायण के जितने भी रूप हैं, उनमें सीता जी कहीं भी तुलसीदास जी के सीता की तरह नहीं हैं। विजय ने प्रतिवाद करते हुए कहा कि हमें समग्रता में चीजों का सिंहावलोकन करना चाहिए। उन्होंने कहा कि हमें फिल्म और धारावाहिक देखकर राम के बारे में राय नहीं बनानी चाहिए। वक्ताद्वय और संवादकर्ता का अभिनंदन अहसास वूमेन उदयपुर श्रद्धा मुर्दिया ने किया।



Shraddha Murdia

Ravana Through a Different Lens



Anand Neelakantan

Under the auspices of its unique three-day long boutique festival *Ramayana Kala Utsav*, the story of Ravana was brought into focus at a session aptly entitled 'Many Faces of Ravana'. Organised by **Prabha Khaitan Foundation**, the session allowed Deepa Mishra, **Ehsaas** Woman of Lucknow, to engage in conversation with one of India's famed mythological authors, Anand Neelakantan.

It came as no surprise that Neelakantan, known for his retelling of the *Ramayana* from the perspective of Ravana in *Asura: Tale of the Vanquished*, was able to encourage an engaging discussion about the myriad shades of a majestic character considered in popular psyche to be an anti-hero. In introducing Neelakantan, Mishra said, "Through his writings, he has shown the importance of perspectives



Deepa Mishra



Malika Varma

and has given voice to the anti-heroes,” and the session panned out to be a significant extension of the same.

Neelakantan elaborated that the concept of Ravana as evil emanates from the influence of Western concepts, particularly the Abrahamic religions of Judaism, Christianity and Islam, wherein the worldview is painted in extreme shades of good and bad. The idea of God *versus* Satan, Heaven *versus* Hell, and sin *versus* virtue have made its way to the ideology of Ram *versus* Ravana.

Neelakantan revealed that the *Ramayana*, meant to be read in conjunction with the *Mahabharata*, enunciates that “all the characters, depending on good or bad acts, bear the fruit of Karma.” Intended to be stories of Karma, we witness all the characters doing good and bad things, for they are aimed as reflections of real life, and no one in real life can be categorised in the extremes of good or bad. *Bhagavatam* and *Vishnu Purana* posited that the *Ramayana* and the *Mahabharata* were meant only as a *leela*, performed to show people things about life and educate them about Dharma, while encouraging a debate between Dharma and Karma.

Ravana is not meant to be an equivalent to Satan or an anti-thesis of God. He is Jaya, the bodyguard of

Vishnu. The confusion arises from the conflation of Valmiki’s *Ramayana* with the Bhakti *Ramayana*. The former, Neelakantan said, shows that “Ravana is not an evil [person] *per se*, though he commits evil deeds. There is a huge difference between evil and evil deeds.” The latter was developed at times of a crisis in faith; periods in which society needed to hold onto the trust in absolute good.

Elaborating further, Neelakantan added that “in no *Ramayana* versions or places is Ravana worshipped as an epitome of bad and Ram as an epitome of good, or *vice versa*. It is just that Ram has performed deeds which can be construed as good keeping in mind the *maryada* of the era,” which outweighs Ravana’s good deeds. Ravana’s leadership and the loyalty he generated amongst his supporters — all except Bibhishan fought for him and

died for him in battle — spoke of his qualities, for the loyalty resulted not from fear but from the good things he did as a leader. Discussing how “the concept of Dharma is very nuanced,” Neelakantan spoke of how whatever they did, they paid the price for it either in that lifetime or the next.

“The world was always Ravana’s world... The purpose of Ram was to indicate that that world (that is, Ravana’s world) also ends,” said Neelakantan. The reverberating message is that there will be someone who

will face all the difficulties, like Ram, and put an end to Ravana’s world in any age. The session drew to a close

with the author pondering why Ram becomes an *avatar*, coming to a conclusion that it is because he does not reveal his human nature. Ram is celebrated because of his sacrifice and self-denial, much like Lord Buddha, who sacrificed kingship for enlightenment. Ravana, on the other hand, acted without any inhibition and did whatever the common human mind desires.

The boutique event, intended to celebrate *Maryada Purushottam* Shri Ram, Sita, and the magnificent ideals and philosophies that emanate from one of the grandest epics of India, was undoubtedly enriched by this nuanced discussion on differing perspectives. The session closed with a vote of thanks by Malika Varma, **Ehsaas** Woman of Kolkata, followed by the felicitation of the eminent guest.



Esha Dutta

Ravana is not an evil [person] *per se*, though he commits evil deeds. There is a huge difference between evil and evil deeds... in no *Ramayana* versions or places is Ravana worshipped as an epitome of bad and Ram as an epitome of good, or *vice versa*. It is just that Ram has performed deeds which can be construed as good keeping in mind the *maryada* of the era, which outweighs Ravana’s good deeds

भीलनी परम तपस्वनी शबरी जाको नाम... संगीता आहूजा और टीम की प्रस्तुति



Kanak Rekha Chauhan and Dimple Trivedi with Vidya Vindu Singh and Sangeeta Ahuja and her troupe

“जब भी राम भक्ति का नाम आता है, तो मातृ स्नेह के साथ शबरी माता का नाम हम सबसे पहले लेते हैं। जब माता शबरी प्रभु राम की प्रतीक्षा करती थीं। सोचती थीं मैं अपने प्रभु श्री राम क्या खिलाऊंगी? मेरे पास तो बेर फल के अलावा कुछ भी नहीं है, खिलाने को। क्या बिछाऊंगी, मेरे पास तो ये टूटी हुई खाट ही है बिछाने के लिए। और क्या पिलाऊंगी, जब तक झरने से पानी भर लाऊंगी, तब तक प्रभु की प्यास भी न बुझा पाऊंगी। इन सब भावों के साथ वे प्रभु श्री राम की प्रतीक्षा कर उनके पथ पर फूल बिछाती थीं।” यह प्रभा खेतान फाउंडेशन की ओर से अयोध्या की पावन धरती पर आयोजित ‘रामायण कला उत्सव’ के तीसरे दिन की पहली प्रस्तुति का पाठ था, जिसे लोक कलाकार संगीता आहूजा और उनकी टीम ने राम कथा के शबरी प्रसंग के साथ प्रस्तुति किया।

आयोजकों की ओर से अहसास वूमन लखनऊ कनक रेखा चौहान ने स्वागत और धन्यवाद वक्तव्य दिया। उन्होंने बताया कि कोलकाता स्थित प्रभा खेतान फाउंडेशन भारत और दुनिया की बहुविध संस्कृति, भाषा, संगीत, साहित्य, शिक्षा, दृश्य कला, नृत्य, नाटक, मौखिक परंपरा और पारंपरिक प्रथाओं का उत्सव मनाता है। इसे श्री सीमेंट लिमिटेड का संरक्षण प्राप्त है और कई प्रतिष्ठित उपक्रमों, सहयोगियों और अहसास वूमन की सहायता से यह ‘कलम’, ‘किताब’, ‘लफ़्ज़’, ‘एक मुलाकात विशेष’, ‘द राइट सर्कल’, ‘सुर और साज’, ‘आखर’ और ‘पोथी’ जैसे अनेक कार्यक्रम आयोजित करता है। श्री राम और शबरी संवाद को राम कथा का हृदय छू लेने वाला अटूट, अनूठा और मार्मिक प्रसंग बताते हुए चौहान ने आहूजा और उनकी टीम को आमंत्रित किया।

सूत्रधार की पार्श्व आवाज में इस भूमिका के साथ संगीतमय सांस्कृतिक प्रस्तुति की

शुरुआत हुई। वनगमन के समय चित्रकूट में श्री राम, लक्ष्मण और जानकी भारद्वाज मुनि, वाल्मीकि मुनि के दर्शन करते हैं। उधर अयोध्या में श्री राम के वियोग में राजा दशरथ ने प्राण त्याग दिए। चित्रकूट में सभी माताओं के साथ राम और भरत का मिलन होता है। तत्पश्चात तीनों पंचवटी पहुंचते हैं, जहां रावण द्वारा सीता का हरण हो जाता है। दोनों भाई वन में चारों ओर भटकते हुए शबरी के आश्रम में पहुंचते हैं। शबरी की अगाध भक्ति अश्रु के रूप में उमड़ पड़ती है। श्री राम आएं इस आस में वे नित्य प्रति उनकी प्रतीक्षा करती थीं। मेरे राम, मेरे राम, आएं, आएं... इस संवाद के पश्चात शबरी प्रसंग की पूरी कथा इस कर्णप्रिय भजन के साथ आगे बढ़ी-

भीलनी परम तपस्वनी शबरी जाको नाम

गुरु मतंग कहकर गए, तोहे मिलेगे राम

ऋषि मतंग के वचन पर करके दृढ़ विश्वास

शबरी करती राम से विनय हरिहर नाथ...

पथ देखत पथरायी अंखियां... दर्शन दो श्री राम

अब मोहे, दर्शन दो श्री राम...

प्यास ने बहुत जलाई अंखियां... अब मोहे, दर्शन दो श्री राम...

वन्य ऋषि उसे समझाते हैं पर शबरी अपने विश्वास पर टिकी रहती है। ऋषि कहते हैं भक्ति और पागलपन में कोई अंतर नहीं है। शबरी परम तपस्विनी है। अंततः शबरी की प्रतीक्षा की घड़ी अंततः समाप्त हुई। भगवान राम और लक्ष्मण के साथ वहां पधारते हैं। वे शबरी से ही उनका आश्रम पूछते हैं। शबरी का भावविह्वल रूप सामने आता है। वह अपने दयानिधान से उन्हें पहचान न पाने के लिए क्षमा मांगती है। माता शबरी का आतिथ्य स्वीकार कर प्रभु श्री राम उनकी कुटिया को पवित्र करते हैं। शबरी प्रभु श्री राम को अपने चखे हुए मीठे बेर खिलाती है। श्री राम जहां वे फल प्रसन्नता से खाते हैं वहीं लक्ष्मण जी वे बेर नहीं खाते हैं।

अद्भुत है महिमा दो अक्षर के राम की

सुनो राम कथा और जय बोलो श्री राम की...

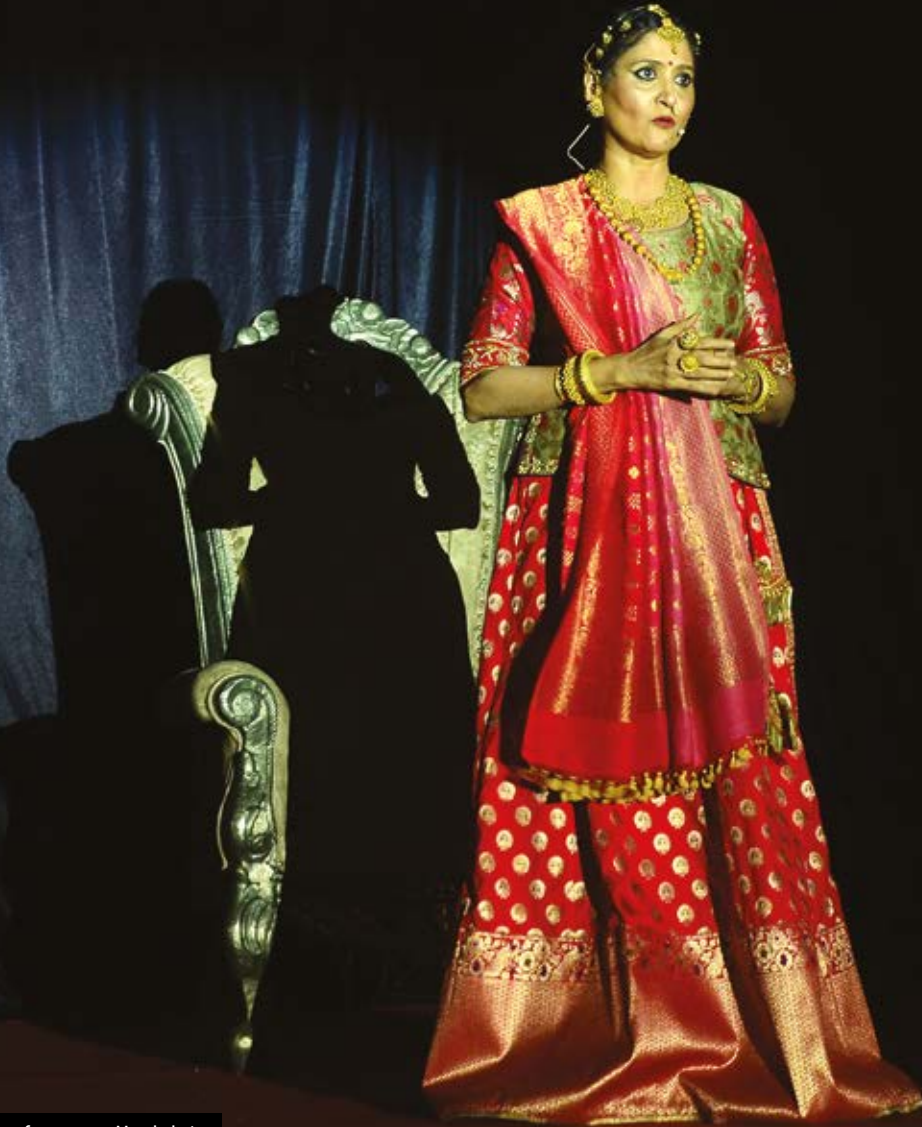
आयोजकों की ओर से अहसास वूमन लखनऊ डिंपल त्रिवेदी ने संगीता आहूजा और साथी कलाकारों का अभिनंदन किया।



Sangeeta Ahuja performs with her troupe

मंदोदरी

राम कथा में स्त्री के परम आदर्शों को जीने वाली मंदोदरी का विपरीत खेमे में होना एक विडंबना है। 'रामायण कला उत्सव' के दौरान पौराणिक काल की महान महिला पात्रों से जुड़े अपने एकल अभिनय के लिए देश भर में चर्चित अंजना चांडक अपनी प्रस्तुति 'मंदोदरी' के माध्यम से काफी कुछ व्यक्त करती हैं। वे इस एकल नाट्य प्रस्तुति से समाज से कई असहज –पर– आवश्यक प्रश्न पूछती हैं? जैसे सहनशीलता क्या साहस का पर्यायवाची है? कब कोई एक रेखा खींच देता है, और कहता है– बहुत हो गया? मंदोदरी... एक बेहद मजबूत, ज्ञानी, दयालु स्त्री... जो सीता के राम के प्रति समर्पण की तरह ही अपने पति रावण के लिए समर्पित जीवन जीती हैं, का दृष्टिकोण इतना अलग क्यों है? मंदोदरी की विचार प्रक्रिया की यात्रा पर आधारित चांडक का हिंदी में प्रस्तुत मोनोड्रामा 'मंदोदरी' इसलिए भी प्रासंगिक है, कि आखिर हम अपने जीवन जीने की कल्पना अपने पूर्ववर्ती चरित्रों से ही तो पाते हैं। झलकियां



Anjana Chandak's performance as Mandodari

कंकन किंकिनि नूपुर धुनि सुनि... अद्भुत है भारतीय लोक में व्याप्त राम कथा



Sonal Mansingh

“जब संस्कृत, संस्कृति, और मूल्य आदर्श हमारे समाज, विशेषकर उत्तर भारत से लुप्त होते गए, संस्कृत पढ़ने, समझने का समय नहीं, इच्छा नहीं रही, तो ये हो गया कि राम के चरण स्पर्श से अहल्या समाधि से बाहर आई, जबकि *वाल्मीकि रामायण* में दोनों भाई जब अहल्या का चरण स्पर्श करते हैं, तो उस स्पर्श से अहल्या महासमाधि से बाहर आई।” यह कहना है पद्मविभूषण से अलंकृत, राज्यसभा सांसद, प्रतिष्ठित नृत्यांगना डॉ सोनल मानसिंह का। वे **प्रभा खेतान फाउंडेशन** द्वारा अयोध्या में आयोजित ‘**रामायण कला उत्सव**’ के ‘*Ramayana in the performing arts*’ यानी ‘*प्रदर्शन कलाओं में रामायण*’ सत्र में बोल रही थीं। **अहसास** वूमेन नोएडा शिंजिनी कुलकर्णी ने स्वागत और धन्यवाद वक्तव्य के साथ अतिथि वक्ता का परिचय दिया।

कुलकर्णी ने कहा कि भारत की सांस्कृतिक धरोहर डॉ मानसिंह के भारतीय शास्त्रीय नृत्य विधाओं में पारंगत होने, विदुषी और अनुभवी कला प्रशासक के अलावा दुनिया के 90 देशों में कार्यक्रम, व्याख्यान और कार्यशालाएं आयोजित करने, सेंटर फॉर इंडियन क्लासिकल डांस के संस्थापक-अध्यक्ष के रूप में किए गए कार्यों की चर्चा की। उन्होंने डॉ मानसिंह के पद्म भूषण, पद्म विभूषण, संगीत नाटक अकादमी रत्न से सुशोभित होने और प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा ‘स्वच्छ भारत मिशन’ के लिए नामित नवरत्नों में से एक होने के उल्लेख के साथ ही बताया कि आप राष्ट्रीय संगीत नाटक अकादमी के अध्यक्ष भी रह चुकी हैं, और वर्तमान में इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र के न्यासी के रूप में दूसरी बार सेवारत हैं। आप पर डॉक्यूमेंटरी और कई पुस्तकें लिखी जा चुकी हैं। आप एक सम्मानित गुरु, प्रखर वक्ता, लेखक और समाजसेवी हैं।

डॉ मानसिंह ने ‘**रामायण कला उत्सव**’ को सामयिक बताते हुए सत्र के विषय की प्रशंसा की और कहा कि यह विषय तो सदियों से चला आ रहा है जब से ऋषि वाल्मीकि ने *श्री रामायण* महाग्रंथ की रचना की। वास्तव में यह महाकाव्य तो है ही इतिहास है। इसके पश्चात कई रामायणों का उद्भव हुआ। मैं आज के भारत की नहीं जंबू द्वीप की बात कर रही हूँ। जापान, बर्मा, वियतनाम, लाओस, कोरिया, श्रीलंका, इंडोनेशिया, कंपूचिया हर जगह श्री राम नाम की धूम मची होती है, ऐसे में भारत की बात क्या करें। परफॉर्मिंग आर्ट्स का मतलब मैं यह समझती हूँ कि जो नृत्य, संगीत, नाटक में विशेषतर दिखाई देता है। जब मैं इसकी बात करती हूँ तो न केवल शास्त्रीय, जो भरत नाट्य शास्त्र पर आधारित विधाएं हैं, बल्कि जिन्हें हम लोक संगीत, लोक नृत्य कहते हैं बल्कि जनजातीय संगीत-नृत्य कहते हैं, सबमें राम कथा निहित है, प्रचलित है, लोकप्रिय है।

डॉ मानसिंह ने 1974 में मानस चतुर्थाब्दी यानी *श्री रामचरित मानस* के चार सौ वर्ष के महोत्सव को याद करते हुए बताया कि उस समय संगीत नाटक अकादमी ने कमानी सभागार में तीन शास्त्रीय विधाओं को प्रस्तुत किया। छःह प्रसंग, तीन विधाएं, तीन नृत्य, तीन नृत्यांगना। सबसे पहले मुझे भरतनाट्यम में पुष्प वाटिका प्रसंग, फुलवारी प्रसंग, सीता स्वयंवर यह सौंपा गया। उमा शर्मा जी को वन गमन, पंचवटी प्रसंग, संयुक्ता जी को जटायु प्रसंग, राम-रावण युद्ध और अयोध्या वापसी सौंपा गया। पुष्पा अवस्थी जी उन दिनों अवधी, ब्रज संगीत की नामी गायिका थी, जिन्होंने फुलवारी प्रसंग में अपना योगदान किया। सीता स्वयंवर में मैंने स्वयं से रागों का चयन किया। डॉ मानसिंह ने इसके बाद जनक राजा के उपवन, उद्यान से अपनी कथा आरंभ की।



Sonal Mansingh with Ehsaas Women



Shinjini Kulkarni

अहल्या का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि श्री वाल्मीकि रामायण और श्री रामचरित मानस में इस प्रसंग में जमीन-आसमान का अंतर है। हमें यह भी समझना होगा कि आखिर अहल्या का नाम पंच कन्याओं में इतने आदर के साथ सबसे पहले क्यों लिया जाता है। अहल्या, द्रौपदी, कुंती, तारा, मंदोदरी तथा। पंचकन्या: स्मरेतन्नित्यं महापातकनाशमा। यह कथा अद्भुत है। उन्होंने महर्षि वाल्मीकि और श्री रामचरित मानस में वर्णित अहल्या के अंतर को विस्तार से बताया। मानसिंह ने आगे श्री रामचरित मानस में फुलवारी प्रसंग की चर्चा की, और कहा कि मेरे द्वारा किया गया यह प्रसंग भरत नाट्यम से ओडिसी में होता हुआ आज भी चल रहा है 'कथा सियाराम की'।

डॉ मानसिंह ने जानकी जी के उस प्रसंग से शुरुआत की जब वे कुलदेवी गौरी के पूजन के लिए सखियों के साथ आ रही हैं और उनमें से एक सखी की दृष्टि दोनों भाइयों पर पड़ती है और वह कहती है-

देखन बागु कुअँर दुइ आए। बय किसोर सब भाँति सुहाए।
स्याम गौर किमि कहीं बखानी। गिरा अनयन नयन बिनु बानी।

अर्थात् दो राजकुमार बाग देखने आए हैं। किशोर अवस्था के हैं और सब प्रकार से सुंदर हैं। वे साँवले और गोरे हैं, उनके सौंदर्य का मैं कैसे बखान करूँ। वाणी बिना नेत्र की है और नेत्रों के पास वाणी नहीं है। डॉ मानसिंह ने आगे श्री रामचरित मानस की इन चौपाईयों- 'कंकन किंकिनि नूपुर धुनि सुनि...', 'चितवति चकित चहँ दिसि सीता...', 'लता ओट तब सखिन्ह लखाए...', 'थके नयन रघुपति छबि देखें...', 'लोचन मग रामहि उर आनी...', 'धरि धीरजु एक आलि सयानी...', 'सकुचि सीयँ तब नयन उघारे...', 'परबस सखिन्ह लखी जब सीता...' का बेहद भावपूर्ण अर्थ बताते हुए इस दोहे पर अपनी बात पूर्ण की-

देखन मिस मृग बिहग तरु फिरइ बहोरि बहोरि।
निरखि निरखि रघुबीर छबि बाढ़इ प्रीति न थोरि।

डॉ मानसिंह ने इसके पश्चात लीलाशुक की कृष्ण कर्णामृत का भी प्रसंग सुनाया और भारतीय नृत्य विधाओं में श्री राम की उपस्थिति के बारे में विस्तार से बताया। उन्होंने श्री राम के शिव भक्त होने और शिव के राम भक्त होने की गहनता के बारे में भी बताया। उन्होंने श्री वाल्मीकि रामायण में वर्णित सीता जी के चरित्र का रेखांकन किया। उन्होंने 'कवितावली' में वर्णित 'अवधेस के द्वारे सकारे गई, सुत गोद के भूपति लै निकसे...' के साथ ही 'श्री रामचन्द्र कृपालु भजुमन हरण भवभय दारुण...' का अत्यंत भावपूर्ण वर्णन किया। डॉ मानसिंह ने बताया कि उन्होंने अपने लिए कोई संपत्ति संचित नहीं है और अपने द्वारा स्थापित संस्था 'श्री कामाख्या कला पीठ, द सेंटर फॉर इंडियन क्लासिकल डांस' को समर्पित कर दिया है। सियावर रामचंद्र की जय के उद्घोष के साथ उन्होंने अपने वक्तव्य को विराम दिया। अहसास वूमन इंदौर सुरभि धूपर ने डॉ मानसिंह का अभिन्दन किया।

Nature is at the Heart of the Epic



Koral Dasgupta

Meenakshi F. Paul

Anand Neelakantan

The figure of Sita has been the ideal to which Indian women have always been pushed to aspire. A woman of inimitable virtue and fortitude, she is the mythological figure that has remained ever-present in the psyche of the masses as the picture of the perfect wife and mother. But newer readings of the character of Sita have unearthed other aspects that had hitherto remained unexplored in academia and popular culture. Her relationship with nature, especially, had been a topic that has sparked the interest of several writers.

To delve deeper into this and other such issues, **Prabha Khaitan Foundation** organised the session 'Mother Earth and Climate Change: Sita's Prophecy' at the *Ramayana*

Kala Utsav held in Ayodhya, with the authors Anand Neelakantan, Meenakshi F. Paul and Koral Dasgupta. Shruti Agarwal, **Ehsaas** Woman of Allahabad, delivered the welcome note while Dasgupta moderated the session.

The conversation commenced with a discussion on the aporias associated with Sita's birth. Neelakantan pointed out that folk tales in Kannada ascribe Sita's origin to Ravana's sneeze, while other versions of the folk tales from different parts of the country say that Sita was Mandodari's stillborn child and was buried to be later discovered by King Janaka.

Meenakshi F. Paul noted how the *Lok Ramayana* of Himachal Pradesh also considers Sita to be Mandodari's



Shruti Agarwal

daughter whom Janaka had discovered, and how the circumstances of her birth and personality point to her deep connection with nature. “The *Ramayana* revolves around Sita’s choices. She is *Prakriti* because, just like *Prakriti*, she cannot be controlled by anyone. *Prakriti*, *Manyusha*, *Pravriti* — all are intertwined. Any kind of imbalance in human life, Nature, or the human mind will harm the whole of creation,” she remarked.

Neelakantan noted that other versions refer to a curse stating that Sita will be born to destroy Lanka. “At the time of birth, Sita is cut into pieces and buried. But she joins herself and becomes Sita. Other versions state that Sita was born out of the fire, like Draupadi,” reflected the author.

Highlighting how nature and its preservation are an integral part of the *Ramayana*, Paul referred to the story of Sita’s *haran*. “Lakshman drew 14 concentric circles for the security of Sita. These 14 circles denoted 7 water bodies and 7 jungles in all directions. When Ravana came to kidnap Sita, he duped her into erasing all the circles to be successful in his heinous motive. This story has a symbolic significance. If our water bodies and forests are safe, we human beings will be safe,” observed Paul.

Neelakantan opined that the *Ramayana* is a story of the nurture of nature. “Contrary to the *Mahabharata*, where *asuras* appear in various animal forms and Lord Krishna kills them, the *Ramayana* is a nature-oriented story where nature is with Ram at every moment. This is evidenced when *Banara* and *Jatayu* fight for him. The

The *Ramayana* revolves around Sita’s choices. She is *Prakriti* because, just like *Prakriti*, she cannot be controlled by anyone. *Prakriti*, *Manyusha*, *Pravriti* — all are intertwined. Any kind of imbalance in human life, Nature, or the human mind will harm the whole of creation
— Meenakshi F. Paul

story signifies the balance between *Prakriti* and *Purush*,” he noted.

Probing the role and character of Ravana in the story, Neelakantan noted that despite Ravana being the destroyer, he does not necessarily have to be labelled as the villain in the story. Clarifying further, he said, “Everything depends on the perspective and reason behind the destruction. The moment one goes into good *versus* evil, it becomes extremely difficult to justify a destructive act.”

Contrary to the *Mahabharata*, where *asuras* appear in various animal forms and Lord Krishna kills them, the *Ramayana* is a nature-oriented story where nature is with Ram at every moment. This is evidenced when *Banara* and *Jatayu* fight for him. The story signifies the balance between *Prakriti* and *Purush*
— Anand Neelakantan

Paul relayed an episode popular in folk tales from Himachal Pradesh where Ram and Lakshman call upon Ravana, the greatest Shiva *bhakt*, to do *yagna* and propitiate Lord Shiva. The *yagna* was being held for *Vijay Prapti* or victory in war. On completion of the *yagna*,

Ram and Lakshman touch Ravana’s feet, and he blesses them saying ‘*Vijayi Bhava*’ or ‘victory be yours.’ “This episode shares a different perspective on the character of Ravana, who is vilified in North India, but who, in Himachal Pradesh or South India, has a different image, and even has temples in his name,” she said.

The session came to a close with an intriguing discussion on the food habits of the characters in the *Ramayana* as depicted in folk literature. The vote of thanks was delivered by Agarwal while Vedula Ramalakshmi, *Ehsaas* Woman of Bhubaneswar, felicitated Neelakantan and Paul.



Vedula Ramalakshmi

तीनों लोकों के कण-कण की चेतना, चित्त और आत्मा में जो व्याप्त हो जाएं, वो राम हैं



“न जानें कितनी लोक कथाएं ऐसी हैं, जिनके नायक राम नहीं थे, लेकिन लोक ने नायक के रूप में राम के विराट व्यक्तित्व को, चरित्र को, गुणों को इस तरह से अपने चित्त में बसाया, अपनाया; जिनसे यह सीख मिलती है कि भारत के सनातन गुण, सांस्कृतिक गुण और सांस्कृतिक चेतना यदि हो तो वह राम के त्याग की हो, राम के लोक धर्म की हो।” यह कहना है प्रख्यात लोकगायिका मालिनी अवस्थी का। वे अयोध्या में आयोजित ‘रामायण कला उत्सव’ के ‘लोक में राम’ सत्र में अपने विचार व्यक्त कर रही थीं। इस सत्र में उनके साथ मीनाक्षी एफ पाल और यतींद्र मिश्र उपस्थित थे। संवादकर्ता की भूमिका मनोज राजन त्रिपाठी ने निभाई। अहसास वूमेन मेरठ अंशु मेहरा ने स्वागत, धन्यवाद और वक्ता अतिथियों के साथ ही सत्र का परिचय दिया। उन्होंने कहा कि राम हम भारतीयों के जीवन में कहां नहीं हैं। जन्म



Anshu Mehra

से मृत्यु तक, दिनचर्या के 'राम-राम, जय-जय सियाराम' से लेकर श्री राम नाम सत्य है तक; यत्र, तत्र, सर्वत्र राम हैं। राम के बिना, उनकी कथा, गाथा के बिना भारतीय लोक की कल्पना भी नहीं की जा सकती। वे लोकगीतों में हैं, तो लोक संगीत में भी, लोक जीवन में तो हैं ही।

मेहरा ने कहा कि अवस्थी अनूठी स्वर साधिका हैं। उनकी खनकती आवाज में भारतीय लोक जीवन का संगीत बजता है। वे अपने गायन में लोक संस्कृति की धरोहर को सहेजती हैं। पद्मश्री सहित कई सम्मानों से अलंकृत अवस्थी भातखंडे संगीत संस्थान लखनऊ से शिक्षा प्राप्त हैं हिंदुस्तानी शास्त्रीय जगत की महान गायिका गिरिजा देवी की गंडा बांध शिष्य हैं। वे अवधी, बुंदेलखंडी और भोजपुरी और हिंदी भाषा और कई क्षेत्रीय बोलियों में गाती हैं, और कजरी, तुमरी, दादरा, फाग, चैता के साथ लोक संगीत की सभी प्रमुख विधाओं में प्रस्तुति देती हैं। उन्होंने कहा कि कवि, अकादमिक और अनुवादक मीनाक्षी एफ पॉल का परिचय पहले के सत्र में दिया जा चुका है। वक्ता यतींद्र मिश्र संगीत, सिनेमा और कला-जगत के जाने-माने विद्वान हैं। आपके चार कविता संग्रह और 'सुर की बारादरी', 'देवप्रिया' और 'नौबतखाने में इबादत' जैसी पुस्तकें खूब चर्चित रही हैं। 'लता: सुर-गाथा' के लिए आप राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार समारोह के 'स्वर्ण कमल' से सम्मानित हैं। वार्ताकार त्रिपाठी का परिचय भी आरंभिक सत्र में दिया जा चुका है।



Vidya Vindu Singh in the audience

त्रिपाठी ने अवस्थी से कहा कि सबकी अपनी-अपनी परिभाषा है, ढेर सारी विडंबना है। आखिर लोक में राम हैं क्या? अवस्थी ने उत्तर दिया कि आपने मूलभूत प्रश्न पूछ लिया कि जीव से ब्रह्म का रिश्ता क्या है? लोक में राम यानी राम जब एक नाम भर न रह जाएं, राम जब एक व्यक्तित्व में सीमित न हो जाएं, राम जब एक इतिहास के पुरुष भर नहीं रह जाएं, राम जब दशावतार के एक अवतार मात्र नहीं रहें, राम जब दशरथ नंदन न रह जाएं, राम जब वनवासी राम न रह जाएं, राम जब तीनों लोकों के कण-कण की चेतना में, चित्त में, आत्मा में व्याप्त हो जाएं, वो हैं राम। ये ऐसे राम हैं कि समुण में होकर भी निर्गुण में कबीर को जब कोई नाम नहीं मिलता तो वो राम हैं। राम वो राम हैं, जो हमारे जीवन के पहले संस्कार से अंतिम सांस तक राम हैं। उठते-बैठते, हर्ष, दुःख, विस्मय, कौतुक सबमें राम हैं। हाय राम, हे राम, राम नाम सत्य है तक...राम त्रेता से लेकर हर युग में, सभ्यता में याद किए गए। राम इतिहास से संस्कृति से ऊपर उठ चुके हैं। इंडोनेशिया यदि राम की संस्कृति को मानता है तो हम समझ सकते हैं कि लोक में राम के होने का अर्थ क्या है। उन्होंने लोक में व्याप्त एक कथा के बीच राजा के एक माली से शिक्षा लेने की कथा सुनाई। शायद इसी से इसका नाम अवध पड़ा।



Nidhi Garg

रामनवमी पर सोशल मीडिया पोस्ट से जुड़े सवाल के उत्तर में पॉल ने कहा कि सभी लोग अपने नजरिए से राम को देखते हैं। आप अपनी चेतना से उन्हें हटा नहीं सकते। वह आपकी गहराई में हैं। नारीवादियों के भी राम हैं। वे दंद्र के बीच भी हैं। उन्होंने हिमाचली लोक गीतों, लोक कथाओं में व्याप्त राम की विस्तार से चर्चा की और कहा कि राम सांसी की धड़कन में भी हैं। मिश्र ने कहा कि कोई अगर नकारात्मक रूप से भी किसी नायक चाहे राम या कृष्ण को देखता है तो उससे भयाक्रांत होने की जरूरत नहीं है, यह उसके बुद्धि विलास की बात हो सकती है। पर राम बुद्धि विलास की चीज नहीं हैं, वे महसूस करने की चीज हैं। अयोध्या में उनके बहुत सारे नाम हैं। हम उन्हें सत्य संघ कहते हैं। यहां दशरथ महल मंदिर में जहां वे राजाधिराज के रूप में स्थापित हैं वहां रणरंग धीर राम कहलाते हैं। रसिक संप्रदाय उन्हें पूर्ण पुरुष के रूप में देखता है, जहां उन्हें पाहुन मानता है।

मिश्र ने लोक कथा, परंपरा और लोकगीतों के उल्लेख के साथ राम के बाल रूप से लेकर सरयु जल के रूप में उनके व्याप्त होने जैसी मान्यताओं का उल्लेख किया और कहा कि वे तमाम रूपों में समादृत हैं। अयोध्या में राम की मर्यादा, उनकी करुणा, दर्द, पीड़ा, मां के साथ विश्वास, राम-जानकी के प्रणय की बानगी भी मिलेगी। राम को समझने के लिए अयोध्या के अंतः परिक्रमा की जरूरत है। उसकी संस्कृति में पैठने, उसके उत्सवों में घुसने की जरूरत है। अवस्थी सहित सभी वक्ताओं ने लोक में राम की व्याप्ति की विस्तार से चर्चा की और माना कि लोक ने राम गाथा के जितने भी प्रसंग हैं, उन्हें स्वीकारा है। उसने उनके संघर्ष, त्याग, मर्यादा और पारिवारिक स्वरूप को अपनाया है। हर श्रम गीत, क्रिया गीत में राम हैं। मिश्र ने कहा कि राम आपको त्याग, मर्यादा, आदर्श सिखाएंगे, राम के लिए खुद का निर्वासन करने की आवश्यकता है। पॉल ने हिमाचली लोक में प्रचलित बंदर की पत्नी के लंगूर के जाने की कथा सुनाई और कहा कि राम ने हरण का विरोध किया। अवस्थी ने आखिरी में अपनी चैती 'लिहले जनम रघुरैया हो रामा, लिहले अयोध्या में...' सुनाया। अतिथियों का अभिनंदन अहसास वूमन भुवनेश्वर निधि गर्ग ने किया।

स्मृति हमारे अस्तित्व का हिस्सा, इन्हें मारा नहीं जा सकता



Badri Narayan

Ashutosh Shukla

Meenakshi F. Paul

“काशी हमेशा जीवंत शहर है, जबकि अयोध्या हमेशा से उदास शहर रहा। यहां राम की पूजा आदि शंकराचार्य ने शुरू की थी। तुलसी का महत्त्व इसलिए भी अधिक है कि तुलसी की रामचरित मानस दुनिया की एकलौती ऐसी किताब है, जो कविता के रूप में लिखी गई और धर्म-ग्रंथ हो गई। जिसकी लोग शपथ लेते हैं।” यह कहना है लेखक, संपादक आशुतोष शुक्ल का। वे अयोध्या में आयोजित ‘रामायण कला उत्सव’ के वैश्विक संदर्भ में रामायण और उसके पात्र’ सत्र में अपने विचार व्यक्त कर रहे थे। इस सत्र में उनके साथ कवि-लेखक बद्री नारायण और संवादकर्ता की भूमिका में मीनाक्षी एफ पॉल उपस्थित थीं। अहसास वूमन अनुभा आर्या ने स्वागत, धन्यवाद वक्तव्य देने के साथ वक्ता-अतिथियों और सत्र का परिचय दिया। उन्होंने कहा कि हमारा आस्थावान समाज धरती कण-कण में श्री राम का अस्तित्व स्वीकारता है। विश्व में जहां कहीं भी भारतीय हैं, या कहे कि प्राचीन काल में भी जहां भारतीय ‘लोक’ गया, अपने साथ रामायण और उसकी मान्यताओं को लेता गया। कंबोडिया, इंडोनेशिया, मारीशस, सूरीनाम में न केवल बड़े मंदिर हैं, और रामलीलाएं खेले जाती हैं, बल्कि वहां के लोकगीत, लोक संगीत में भी श्री राम कथा व्याप्त है। सैकड़ों की संख्या में विविध भाषाओं में श्री राम चरित और रामायण मिलता है।

अतिथियों का परिचय देते हुए उन्होंने कहा कि कवि, जन-बुद्धिजीवी और समाज-विज्ञानी बद्री नारायण हिंदी और अंग्रेजी भाषाओं में समान रूप से लिखते हैं। आप गोविन्द बल्लभ पंत सामाजिक विज्ञान संस्थान प्रयागराज में प्रोफेसर और निदेशक हैं। एक संवेदनशील कवि के रूप में भी अपनी पहचान बनाई है। आप साहित्य अकादेमी पुरस्कार सहित कई पुरस्कारों से सम्मानित हैं। संपादक और लेखक शुक्ल लगभग छत्तीस



Anubha Arya

वर्षों से पत्रकारिता में हैं। आपकी अब तक चार पुस्तकें प्रकाशित हैं। बनारस, पत्रकारिता और युवाओं के अलावा 'कृष्णा कॉलिंग' युवाओं के लिए बहुत प्रेरक पुस्तक है। इतिहास, समाज, पुराण और संस्कृति आपकी रुचि के विषय हैं। संवादकर्ता पॉल हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय में अंग्रेजी की प्रोफेसर और प्राचार्य हैं। आपने ग्यारह पुस्तकों का संपादन और लेखन किया है।

पॉल ने वक्ताओं से विषय पर संक्षिप्त टिप्पणी देने का अनुरोध किया तो शुक्ल ने एक ऋषि की कथा सुनाई, जिनकी पत्नी के पहले से दो प्रेमी होते हैं। पहले प्रेमी से जो पुत्र होता है, उसका नाम है सुग्रीम, और दूसरे प्रेमी से जो पुत्र होता है उसका नाम है फाली। सुग्रीम यानी सुग्रीव, फाली माने बाली। पति से एक पुत्री होती है, जिसका नाम है फोंगसी। इसी कन्या फोंगसी ने एक दिन अपने पिता से मां की पुरानी प्रणय कथाएं बता दी। मां ने उसे श्राप दे दिया कि जा तू वानर हो जा। वह वानर होकर वाराणसी खंड में आती है। वहां एक ऐसे वृक्ष पर रहती है, जिसकी दो शाखाओं में से एक शाखा पर रहने से वानर तो दूसरी शाखा पर रहने से मनुष्य हो जाएंगे। बाद में यहां दो लड़के आते हैं, जिनका नाम है फालाम और फालाम। फालाम एक डाल पर जाते हैं और बंदर हो जाते हैं। वहां उनके संबंध बनते हैं, जिनसे उनका एक पुत्र होता है, जिसका नाम रखा जाता है हनुमोन या हल्लमान। लाओस की इस कथा को सुनाते हुए शुक्ल ने कहा कि हर जगह मूल कथा एक जैसी है। पर राम कथा का विस्तार बहुत दूर तक है।

नारायण ने सूरीनाम की घटना से अपनी बात शुरू की। उन्होंने कहा कि मैंने एक बुजुर्ग महिला से पूछा कि क्या आप राम को जानती हैं? तो बगल में बैठे उनके 75 साल के पति ने कहा कि जैसे राम को वनवास हुआ था, वैसे ही हम लोग भी वनवास काट

रहे हैं। पूरा जो प्रवासी समुदाय है त्रिनाडाड, फिजी, गुयना, मॉरीशस में 1.2 मिलियन लोग माइग्रेंट करके 1833 से 1922 तक गए हैं, उनकी सोच में जो एकता है, वह राम वनवास से समानता का भाव है। उस महिला ने अवधी में कहा कि कथा मैं तब सुनाऊंगी, जब आप यह मानेंगे कि न तो इसे कहने वाले का दोष है, न ही सुनने वाले का, बल्कि जिसने यह कथा की और लिखी उनका ही दोष मानिएगा। फिर उसने बताया कि जब वे लोग कलकत्ता से जहाज से मारापारिबो में उतरे तो यहां कुछ भी नहीं था। जब भी कोई जहाज से कोलकाता से आता था तो वे लोग तीन चीज मांगती थी, तुलसीकृत रामचरित मानस का गुटका, नयनसुख कपड़ा और माला। जब यह सामान आता था, तो वहां लूट मच जाती थी। रामचरित मानस में इतने बदलाव हुए हैं और उसकी इतनी व्याप्ति है कि पूछिए मत। लोग आज उन कथाओं का आधा गीत भूल चुके हैं, पर उसे पूरा करते हैं राम।

पश्चिम में राम कथा कैसे पहुंची के सवाल पर शुक्ल ने दस अवतारों में राम और कृष्ण के मानवीय होने का उल्लेख किया। उसमें भी राम ने साधारण मानव के रूप में जो चरित्र दिखाया, हम उससे प्रभावित होते हैं। यहां राम का सरल मानवीकरण है। हमें इस्लाम के प्रभाव के साथ ही इस्लाम और ईसाइयत के दुष्प्रभावों की भी चर्चा करनी चाहिए। उन्होंने कहा कि तुलसी का नायक जितना अप्रतिम है, उसका गायक भी उतना ही अप्रतिम है। उन्होंने कहा कि आप राजनीति से राजनीति को पराजित कर सकते हैं, पर इससे विचारों को नहीं हरा सकते हैं। विचार को हराने के लिए आपको किताबों में जाना होगा। पिछले पांच सौ वर्षों में संस्कृति का कोई रक्षक है, तो वह तुलसीदास हैं। नारायण ने प्रवासी मानसिकता में व्याप्त राम कथा और दुनिया भर में अनुठी व्याप्ति के बारे में विस्तार से बताया और कहा कि व्यापार के साथ हमारी कथाएं और भजन भी यात्रा करते थे। हमारे यहां भजन और रामचरित मानस के पाठ की भी अपनी पद्धतियां हैं। लोकशक्ति इसमें भी प्रयोग करती रहती है। इन कथाओं ने प्रवासी भारतीयों को जीने की ताकत दी।

वक्ताद्वय ने बच्चों और युवाओं के बीच इन कथाओं को पहुंचने के माध्यम के रूप में परिवार और शिक्षा की भूमिका के बारे में भी बताया। नारायण ने कहा कि राम कथा जन कथा के रूप में व्याप्त है। स्मृतियों को मारा नहीं जा सकता। स्मृति हमारे अस्तित्व का हिस्सा है। समाज शक्ति राज शक्ति से बड़ी शक्ति है। उन्होंने भाषा और रामलीला के महत्त्व, उसमें व्याप्त समरसता और अवतारवाद पर भी विस्तार से अपनी बात कही। अतिथियों का अभिनंदन अहसास वूमन नागपुर मोनिका भगवागर ने किया।



Monica Bhagwagar

राम, अयोध्या और इसके संगीत की व्याप्ति सार्वभौमिक है



Shrinjini Kulkarni



Malini Awasthi

“पूरे विश्व में जहां भी राम पर आस्था रखने वाले लोग हैं उनके हृदय में पहला गीत प्रस्फुटित होता है तो वह राम और अयोध्या से जुड़ा होता है।” यह कहना है प्रख्यात लोकगायिका मालिनी अवस्थी का। वे अयोध्या में आयोजित ‘रामायण कला उत्सव’ के ‘Music Tradition in Ayodhya’ सत्र में अपने विचार व्यक्त कर रही थीं। इस सत्र में प्रभा खेतान फाउंडेशन और आयोजकों की ओर से उनका और संवादकर्ता शिंजिनी कुलकर्णी का स्वागत, धन्यवाद और परिचय दिया अहसास वूमन सुरभी धूपर ने। सत्र के विषय में उन्होंने कहा कि अवध की इस भूमि पर जहां श्री राम ने अवतार लिया, जहां राम राज्य की स्थापना हुई, वह भूमि एक अनूठी संगीत परंपरा की साक्षी है। श्री राम और जानकी जी यहां संगीत मय हैं, भोर के उजाले के साथ भजन लहरियों और संध्या आरती में भी.... अयोध्या का लोक जीवन अपने राम को अपने लोकगीतों और लोक संगीत में बहुत सहजता से पिरोता है।

अवध की माटी को अपनी मोहक आवाज से भर देने और ‘मोरे राम अवध घर आए....’ जैसे गीत को दुनिया भर में पहुंचा देने वाली अवस्थी को अनूठी स्वर साधिका बताते हुए धूपर ने कहा कि उनकी खनकती आवाज में भारतीय लोक जीवन का संगीत बजता है। वे लोक संस्कृति की धरोहर को सहेजती हैं। भातखंडे संगीत संस्थान लखनऊ से शिक्षा प्राप्त अवस्थी प्रख्यात शास्त्रीय गायिका गिरिजा देवी की गंडा बांध शिष्य हैं। वे लोक संगीत की सभी प्रमुख विधाओं में प्रस्तुति देती हैं। आप पद्मश्री सहित कई सम्मानों से अलंकृत हैं। उन्होंने आगे के संवाद के लिए कलाकार, नृत्यांगना, अभिनेत्री और अहसास वूमन नोएडा कुलकर्णी को आमंत्रित किया।

कुलकर्णी ने कहा कि लोक ने श्री राम को ऐसे अपना लिया है कि वे अपने दैनिक जीवन के संघर्ष को भी श्री राम से जोड़कर देखते हैं और उसी से अपना मनोबल भी बढ़ाते हैं। संगीत परंपरा में हम इसे किस-किस प्रकार से देखते हैं। विशेषकर अयोध्या के अंदर ये गायन शैली में किस तरह से दिखाई देता है। अवस्थी ने कहा कि अयोध्या राम की धरती है, साथ ही समर्पण,



Surbhi Dhupar

भक्ति और अध्यात्म की धरती है। यहां के नायक का प्रभाव उसके संगीत पर भी पड़ता है। एक आम भारतीय के जीवन में, चाहे उत्तर भारत हो या दक्षिण भारत, जीवन का एक-एक संस्कार, जन्म से मरण तक जब राम से जुड़ा हुआ है, तब हम कह सकते हैं कि अयोध्या की व्याप्ति सार्वभौमिक है। उनकी बात वैश्विक है, इसलिए उनके जीवन चरित पर आधारित गीत भी वैश्विक है। उन्होंने कहा कि घर का पहले संस्कार जो पारंपरिक सोहर गीत है, उसमें भी अयोध्या की आध्यात्मिक आभा है। अवस्थी ने 1997-98 के अपने अयोध्या प्रवास के दौरान उत्सव, भक्ति, संस्कार, शृंगार को याद किया।

अवस्थी ने सुर में यह सोहर सुनाया-

बाजत अवध बधईया, दशरथ घर सोहर, दशरथ घर सोहर हो,

ए हो जन्में हैं दीनदयाल, दोनहूँ कुलतारन, दोनहूँ कुलतारन हो....

हो रामा, जन्में हैं दीनदयाल, दोनहूँ कुलतारन, दोनहूँ कुलतारन हो....

आगे की बधाई में अवस्थी ने गाया-

राम के माथे की लटुरिया बहुत नीकै लागै हो, गजब छवि लागै हो...

उन्होंने इसी सोहर में यह पंक्ति भी सुनाई-

दिया है बुआ सुहाग त पतरी अंगुरिया, अंगुरिया नाहीं डोरै हो..

घर के हर मांगलिक कार्य में घर की बिटिया का होना, यानी बच्चे की बुआ का होना, राम के संदर्भ में बुआ शांता का होना, बुआ का आना, वह सुहाग दे रही हैं, बच्चे को काजल लगा रही हैं, लेकिन उंगली डोल नहीं रही है। उसका वर्णन है, पर अंत में -

जे यह मंगल गाई, मंगल गाई, मंगल गाइय हो

वह बैकुंठही जाई, परम पद पाई, परम सुख पावई हो...

बाजत अवध बधईया, दशरथ घर सोहर, दशरथ घर सोहर हो...

यह सोहर है, बधाई गीत है, पर अंत में यहां भी वही है कि बैकुंठ जाओगे, मोक्ष वहीं है यदि राम के जन्म का प्रताप, उनके गुण गाओगे। अवध में, अयोध्या में आपको गली-गली में आपको संत परंपरा में इसी समर्पण भाव से गीत गाते हुए मिलेगी। इस परंपरा को आम व्यक्ति ने, लोक ने, समाज ने अपने घर में चिंतस्थ कर लिया कि हमारे राम हैं, कौन कहता है कि अयोध्या के राम हैं। हमारा लड़का पैदा हुआ, यही राम है। इसका मुंडन हुआ, नेग मांगा तो यही गीत गाएंगे। इसका जनेऊ हुआ तो समझेंगे कि राम का यज्ञोपवीत हुआ। ऐसे ही राम का प्रसंग है।

अवस्थी ने विवाह में गाया जाने वाला संस्कार गीत, "राम पहिरें फूलन को सेहरा, रघुवर पहिने फूलन को सेहरा...", सुहाग गीत, "सियारानी का अचल सुहाग रहे, राजा राम के सिर पर ताज रहे..." संदर्भ और व्याख्या सहित सुनाया। उन्होंने कहा कि आपको यहां के मंदिरों में एक से एक सुंदर सुहाग गीत, बधाई गीत मिलेंगे। इन गीतों को, भजन-कीर्तन को जिंदा रखा गौनीहारों ने, मिरासिनो ने। उन्होंने फैजाबाद की समृद्ध परंपरा और अमीर खुसरो के जीवन को याद किया कि कैसे अयोध्या की आध्यात्मिक परंपरा ने उनको बदल दिया। जो रचते हैं, "भैया को दियो बाबुल महले दो-महले हमको दियो परदेस रे...", "अम्मा मेरे बाबा को भेजो री कि सावन आया रे..." अवस्थी ने बेगम अख्तर को अवध के नुमाइंदे के रूप में याद किया। उन्होंने कहा कि वह इस इलाके कि एकलौती ऐसी शख्सियत थीं, जिसमें केवल गजल नहीं है, पूरबी, होरी, कजरी, तुमरी, दादरा भी है। उनके गीतों में अयोध्या छूटता नहीं है। वह अपने समर्पण में हमेशा कहती थीं कि इसमें पूरब का रंग है।



Malika Varma

मिथिलावासियों की अयोध्यावासियों से हंसी-ठिठोली से जुड़ी शिकवा-शिकायत के उत्तर में अवस्थी ने कहा कि उन्हें धन्य होना चाहिए कि अवध ने किस तरह जानकी जी को अपने माथे पर रखा है। अवस्थी ने गारी परंपरा में इष्ट से मानवीय तादात्म्य का विस्तार से उद्घरण दिया और गारी गीत भी सुनाया, "बता द बुआ, लोगवा देत काहे गारी..."। सत्र के समापन गान के रूप में अवस्थी ने स्वेच्छा से एक पद सुनाया, "सिया संग झूले बगिया में राम ललना..."। उन्होंने गीतों में सरयू मैया की उपस्थिति और अयोध्या के मंदिरों की गायन परंपरा से जुड़ी ध्रुपद-पखावज की चर्चा भी। अहसास वूमन कोलकाता मलिका वर्मा ने अवस्थी का अभिनंदन किया।



Ehsaas Women and panellists in the audience

भरतीय फिल्मों की भाव भूमि राम कथा या गांधी कथा से प्रेरित



Yatindra Mishra

Manoj Rajan Tripathi

Anant Vijay

प्रभा खेतान फाउंडेशन द्वारा अयोध्या की पावन भूमि पर आयोजित 'रामायण कला उत्सव' का यह सबसे मजेदार सत्र था। बात 'फिल्मों में श्रीराम का चरित्र चित्रण' पर हो रही थी और वक्ता के रूप में उपस्थित थे पत्रकार-स्तंभकार अनंत विजय, संगीत-सिनेमा और कला पारखी यतीन्द्र मिश्र और वार्ताकार थे पत्रकार-लेखक मनोज राजन त्रिपाठी। **अहसास** वूमन श्रद्धा मुर्डिया ने स्वागत-धन्यवाद वक्तव्य, सत्र और अतिथियों का परिचय दिया। उन्होंने कहा कि श्री राम हमारी लोक में कथाओं, गाथाओं, गीतों और ग्रंथों के साथ ही युवाओं के बीच फिल्मों, धारावाहिकों के माध्यम से भी पहुंचे। अभी कोविड काल में जब रामायण धारावाहिक का प्रसारण हुआ तो उसे रिकॉर्ड संख्या में देखा गया। हममें से बहुतों ने ऐसे समाचार पढ़े और देखें होंगे कि लोग इन फिल्मों-धारावाहिकों के प्रसारण के समय हाथ जोड़े रहते थे और इनके कलाकारों में श्री राम से जुड़ी छवि देखते थे।

विजय की ढाई से भी अधिक दशक से पत्रकारिता में सक्रियता और ग्यारह पुस्तकों के प्रकाशन का उल्लेख करते हुए उन्होंने बताया कि इनमें 'प्रसंगवश', 'कोलाहल कलह में' और 'मार्क्सवाद का अर्धसत्य' काफी चर्चित रहीं। इसी तरह पुस्तक 'अमेठी संग्राम' के कई संस्करण आ चुके हैं और यह अंग्रेजी में भी प्रकाशित है। आप सिनेमा पर सर्वोत्कृष्ट लेखन के लिए राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार 'स्वर्ण कमल' सहित कई पुरस्कारों से सम्मानित हैं और वर्तमान में दैनिक जागरण के एसोसिएट



Shraddha Murdia

एडिटर हैं। मिश्र के उल्लेखनीय कामों में चार कविता संग्रह, गायिका गिरिजा देवी, नृत्यांगना सोनल मानसिंह और शहनाई वादक उस्ताद बिस्मिल्लाह खान के जीवन-काव्यों पर 'सुर की बारादरी', 'देवप्रिया' और 'नौबतखाने में इबादत' जैसी पुस्तकें शामिल हैं। पुस्तक 'लता: सुर-गाथा' के लिए कई सम्मान के साथ राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार का 'स्वर्ण कमल' प्राप्त कर चुके हैं। वार्ताकार त्रिपाठी तीन दशक से पत्रकारिता में हैं और फिल्म 'अतिथि तुम कब जाओगे-पार्ट टू (गेस्ट इन लंडन)' के डायलॉग राइटर भी हैं। आपने पत्रकारिता के अलावा बतौर गायक भी कई अवॉर्ड जीते हैं। जी मीडिया में एडिटर हैं और CODE काकोरी नामक उपन्यास के लेखक भी।

त्रिपाठी ने सत्तर के दशक में अमिताभ बच्चन अभिनीत एक फिल्म की कहानी से शुरुआत की और मिश्र से पूछा कि हमने राम को हमेशा नीले वर्ण में छवि देखा है, जबकि अभी एक फिल्म में वे मूछों वाले हैं और उनकी छवि बहुत क्रोध वाली है। इस पर बहुत विवाद हुआ। ऐसा उनकी छवि के साथ कोई खिलवाड़ है या किसी दूसरी रामायण में लिखी राम की कोई छवि है, जिस पर विवाद नहीं होना चाहिए? उत्तर में विद्यानिवास मिश्र की इस सीख कि जब संसार में श्रेष्ठ साहित्य उपलब्ध है, तो अपने छोटे से जीवन को व्यर्थ की चीजों के अध्ययन में क्यों नष्ट कर रहे हो को याद करते हुए मिश्र ने कहा कि मुझे राम कथा और रामायण पर संबंधित फिल्म पर बात करनी है तो 'आदि पुरुष' जैसी किसी फिल्म पर बात करने की जरूरत नहीं है। हमारे पास पुरानी समृद्ध परंपरा है, जब विष्णुपंत पगनिस, बालगंधर्व, जयशंकर सुंदरी, मास्टर फिदा नरसी, मास्टर दीनानाथ मंगेशकर जैसे लोग हैं, जो रंगमंच पर राम कथा उकेरते थे।

उन्होंने प्रेम अदीब की फिल्मों 'भरत मिलाप', 'राम राज्य' और 'राम हनुमान युद्ध' को याद किया और कहा कि कहा जाता है कि गांधी जी ने अपने जीवन में एक ही फिल्म देखी थी और वह

थी 'राम राज्य'। अगर समकालीन लोगों की भी बात करूं तो मैं गोविंदम अरविंदम की मलयालम फिल्म 'कंचन सीता' देखना पसंद करूंगा जहां राम को ज्यादा खूबसूरत, ज्यादा समावेशी, ज्यादा वृहत्तर रूप में दिखाया गया है। मिश्र ने ऐसे में 'आदि पुरुष' से जुड़े सवाल पर बात करने से इनकार कर दिया। मिश्र ने कल्याण में प्रकाशित राम की स्नेहिल छवि और राजा रवि वर्मा की पेंटिंग्स से जुड़े चित्रों की बात की और कला, नृत्य, संगीत में व्यास राम 'तुमक चलत रामचंद्र बाजत पैजनिया' जैसी छवियों को अपनाने की बात की और राम को समादृत करने में सिनेमा की सीमाओं को रेखांकित किया। विजय ने कहा कि 'आदि पुरुष' में राम की जो छवि है वह लोक में व्याप्त राम की छवि और मानस के साथ ज्यादाती है। वैसे भी किसी भी रामायण में और राम कथा में राम सिर्फ एक-दो बार ही क्रोधित हैं। फिल्मकार ने भी अपनी गलती मानकर उसमें सुधार किया है।

त्रिपाठी ने 'राम सेतु' फिल्म से जुड़ा सवाल पूछा, जिस पर विजय ने कहा कि इस फिल्म में बहुत सारी विसंगतियां थीं। उन्होंने विमल राय को याद करते हुए कहा कि भारतीय फिल्मों की जो भाव भूमि है वह या तो राम कथा से प्रेरित है या गांधी कथा से प्रेरित है। भले ही वे सीधे दिखाई दें न दिखाई दें पर उनकी छवि की छाया जरूर दिखाई देगी। उन्होंने इस बात पर अचरज किया कि गांधी पर संपूर्णता से किसी भी भारतीय फिल्मकार ने फिल्म नहीं बनाई। त्रिपाठी ने 'गोलियों की रासलीला राम-लीला' जैसी प्रेम कथा और 'पीके' जैसी फिल्म में भगवान के चरित्र के चित्रण से जुड़ा सवाल पूछा तो मिश्र ने उत्तर दिया कि आप संजय लीला भंसाली की फिल्मों की, फ्लाप फिल्मों का उदाहरण क्यों दे रहे हैं? आप राजश्री बैनर की फिल्मों की बात क्यों नहीं कर रहे, जिसकी हर फिल्म हिट होती रहीं। 'हम साथ साथ हैं' जैसी फिल्म आधुनिक संदर्भ में राम के आदर्शों को दिखाती है। उनका तंज था कि अगर आप राम कथा को जानते नहीं, तो फिल्म बनाते क्यों हैं? उन्होंने 'सत्यकाम' फिल्म का उद्धरण भी दिया, जिसमें हीरो ने पूरी तरह राम के आदर्शों को आत्मसात किया है।



Shruti Agarwal

त्रिपाठी द्वारा जब्बार पटेल की फिल्म 'तीसरी आजादी' में दलितों के शोषक के रूप में भगवान राम के चित्रण से जुड़े सवाल पर विजय ने कहा कि फिल्मों के सार्वजनिक प्रदर्शन के लिए एक बोर्ड की स्थापना कर रखी है, पर फिल्मों का बहिष्कार करने की आजादी भी आपके पास है। इस सत्र में दर्शक के रूप में उपस्थित विद्या विंदु सिंह ने श्री राम के चरित्र चित्रण से जुड़े कलाकारों के संस्कारी प्रशिक्षण और मालिनी अवस्थी ने फिल्मों में राम से जुड़े गीतों की सफलता का उल्लेख किया। अतिथियों का अभिनंदन अहसास वूमन प्रयागराज श्रुति अग्रवाल ने किया।

‘कथा सियाराम की’ के सीता स्वयंवर प्रसंग से भाव विह्वल हुए दर्शक



Sonal Mansingh's performance

श्री राम रामेति रमे रामे मनोरमे, सहस्रनाम तत् तुल्यं रामनाम वरानने...

अयोध्या में ‘रामायण कला उत्सव’ के तीसरे और आखिरी दिन का अंतिम सत्र डॉ सोनल मानसिंह के Lecture Demonstration को समर्पित था। भारत की प्रतिष्ठित सांस्कृतिक धरोहर के रूप में समादृत, प्रख्यात नृत्यांगना गुरु, विदुषी, राज्यसभा सांसद, पद्म विभूषण से अलंकृत डॉ सोनल मानसिंह का स्वागत और धन्यवाद वक्तव्य **अहसास** वूमेन नोएडा शिंजिनी कुलकर्णी ने किया। उन्होंने बताया कि डॉ मानसिंह अपनी विश्व प्रसिद्ध नृत्य-नाटिका ‘कथा सियाराम की’ के कुछ प्रसंग यहां प्रस्तुत कर रही हैं। उनके साथ पखावज और बोल पढ़ंत पर संगत कर रहे हैं ऋषि शंकर उपाध्याय।

डॉ मानसिंह ने ‘ॐ’ की मधुर आध्यात्मिक ध्वनि के साथ ही इस ‘मंगलाचरण श्लोक’ से शुरुआत की-



Sonal Mansingh with Ehsaas Women, panelists and Team Prabha Khaitan Foundation

लोकाभिरामं रणरंगधीरं राजीवनेत्रं रघुवंशनाथम्

कारुण्यरूपं करुणाकरंतं श्रीरामचंद्रं शरणं प्रपद्ये

इस स्तुति के साथ ही उन्होंने अयोध्या के राजकुमार श्री राम के साथ जनकदुलारी राजकुमारी सीता के विवाह का प्रसंग प्रस्तुत किया। उन्होंने अपनी अद्भुत आवाज, अविस्मरणीय वाचिक कौशल और नृत्य भावभंगिमा के साथ मिथिला में राजा जनक के दरबार के वंदनवार से सजने से कथा की शुरुआत की। पूरी कथा गोस्वामी तुलसीदास कृत श्री रामचरित मानस के दोहे, चौपाई और छंद और उनकी व्याख्या के साथ चलती रही।

कथा में राजकुमारी सीता के पिता मिथिला के राजा जनक के महल में वंदन, तोरणवार सजे हैं, मंगलगान बज रहे हैं। ध्वजा-पताका सजी है। सीताजी के विवाह का स्वयंवर सजा है। भव्य आयोजन स्थल पर ऋषिवर विश्वामित्र द्वारा अनुरक्षित श्री राम और छोटे भाई लक्ष्मण का प्रवेश होता है।

राजत राज समाज मुहँ कौशल राज किशोर

वहां भाट, चारण और कवि राजा जनक द्वारा ली गई प्रतिज्ञा और प्रतिभागियों से जुड़ी शर्त की घोषणा करते हैं कि जो कोई अकेले ही भगवान शिव द्वारा प्रस्तुत महान धनुष को उठाने और उसकी प्रत्यंचा चढ़ाने में सफल होगा, वही सीता से विवाह करेगा। स्वयंवर एकत्रित सभी सम्राट और राजा, रईस और महान योद्धा अपनी किस्मत आजमाते हैं लेकिन कोई भी सफल नहीं होता है। यहां तक कि दस हजार ने सामूहिक रूप से धनुष को उठाने की कोशिश की, लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ।

श्रीहत भए हारि हियँ राजा, बैठे निज निज जाइ समाजा।

निराश विदेह राजा जनक जोर-जोर से सीता के भाग्य पर अफसोस जताते हैं, जो अंततः अविवाहित रहेंगी। वे कहते हैं -

बीर बिहीन मही मैं जानी,

तजहु आस निज निज गृह जाहू

लिखा न बिधि बैदेहि बिबाहू

यह सुनते ही लक्ष्मण आगबबूला हो जाते हैं, उनकी आंखें लाल हो जाती हैं। लेकिन ऋषि विश्वामित्र उन्हें शांत करते हैं और धीरे से राम को आगे बढ़ने को कहते हैं।

गुरहि प्रनामु मनहि मन कीन्हा। अति लाघवँ उठाइ धनु लीन्हा।

लेत चढ़ावत खँचत गाढ़ें। काहुँ न लखा देख सबु ठाढ़ें

तेहि छन राम मध्य धनु तोरा। भरे भुवन धुनि घोर कठोरा।

श्री राम सहजता से धनुष को उठाते, प्रत्यंचा खींचते हैं, वह जोर गर्जना के साथ दो भागों में टूट जाता है। वहां नृत्य, गायन और आनन्द छा जाता है, सीता का शृंगार होता है और राम के गले में विवाह की वरमाला पहनाई जाती है। 'ॐ स्वस्ति अस्तु'। डॉ मानसिंह ने कहा कि चाहे कलियुग हो या त्रेता युग हो, हमारी दृष्टि हो कि हमें सब ओर मंगल दिखाई दे। आयोजकों की ओर से अहसास वूमन लखनऊ कनक रेखा चौहान, दीपा मिश्रा और डिंपल त्रिवेदी ने डॉ मानसिंह का अभिनंदन किया।

राज सदन में रात्रि भोज

यह एक अलग तरह की संध्या थी। प्रेम, राग और मेल-मिलाप से परिपूर्ण। सुस्वादु भोजन तो इसकी एक अतिरिक्त विशिष्टता थी ही। 'रामायण कला उत्सव' के वक्ताओं, अतिथियों और देश भर से अयोध्या पहुंचीं अहसास वूमन के लिए इस घड़ी की स्मृतियां लंबे समय तक बनी रहने वाली हैं। यों तो तीन दिवसीय इस आयोजन का हर पल अद्भुत और अविस्मरणीय है, चाहे वह कर्णप्रिय भजन-संगीत हो, मनोहारी सांस्कृतिक प्रस्तुतियां हों या श्री राम को समर्पित राममय बौद्धिक विमर्श... पर इन सबके बीच अयोध्या के 'राज सदन' में आयोजित रात्रि-भोज ने भी सबके मानस पर एक अनूठी छाप छोड़ी। साहित्य रसिक और कला मर्मज्ञ, कवि और लेखक यतीन्द्र मिश्र और से प्रभा खेतान फाउंडेशन द्वारा अवध की पावन भूमि में आयोजित रात्रि-भोज का आयोजन किया। इस अवसर की कुछ झलकियां

उनकी उद्यमी बहन मंजरी मिश्र ने अयोध्या राज परिवार की ओर 'रामायण कला उत्सव' में पधारे अतिथियों, सहभागियों के लिए



The Raj Sadan (a file picture)



Yatindra Mishra with Ehsaas Women and the team of Prabha Khaitan Foundation



Anand Neelakantan and Yatindra Mishra



Anant Vijay and Vandana Singh



Anindita Chatterjee and Nidhi Garg



Anvita Pradhan and Rachna Seth



Sonal Mansingh and Vimlendra Mohan Pratap Mishra



Shinjini Kulkarni



Deepa Mishra



Dimple Trivedi and Anubha Arya



Kanak Rekha Chauhan and Yatindra Mishra



Koral Dasgupta, Malika Varma and Monica Bhagwagar



Malini Awasthi and Manjari Mishra



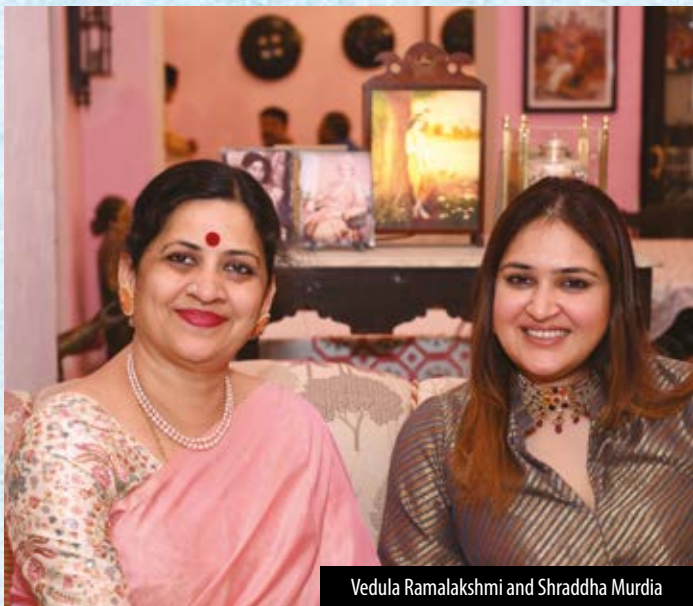
Manisha Jain and Anshu Mehra



Manoj Rajan Tripathi and Vidya Vindu Singh



Shruti Agarwal and Esha Dutta



Vedula Ramalakshmi and Shraddha Murdia



Suchitra Sajid Dhanani and Surbhi Dhupar



Puja Arora, Anjana Chandak and Meenakshi F. Paul

‘रामायण कला उत्सव’ में सुदीप्त कुंडू की कला प्रदर्शनी ने जीता दिल

अयोध्या में ‘रामायण कला उत्सव’ के दौरान भजन, सांस्कृतिक संध्या और विचार-विमर्श के सत्रों के अलावा एक अनूठी कला प्रदर्शनी ने भी सबका ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया। ख्यात कलाकार सुदीप्त कुंडू ने संपूर्ण राम कथा को अपने चित्रों से जीवंत कर एक प्रदर्शनी लगाई थी, जिसने अतिथियों, वक्ताओं के दिल पर अमिट छाप छोड़ी।

याद रहे कि प्रभा खेतान फाउंडेशन से लंबे अरसे से जुड़े कुंडू अपनी कला क्षमता और उद्देश्य को लेकर बहुत स्पष्ट हैं- वह चाहते हैं कि दर्शक उनकी पेंटिंग्स को ‘पढ़ें’। रामायण कला उत्सव के दौरान उनके चित्रों की जीवंतता उनके इन विचारों को पुष्ट करती है। कुंडू कहते भी हैं, “आत्म अभिव्यक्ति मेरे लिए बहुत महत्वपूर्ण है। मैं जो सोचता हूँ और उस सटीक सोच को कैनवास पर उतारना वास्तव में चुनौतीपूर्ण है। कभी-कभी यह बहुत कठिन होता है और कभी-कभी यह अनायास ही आ जाता है। मेरा मानना है कि मैं जो कुछ भी चित्रित करता हूँ वह सरल होना चाहिए और दर्शकों के एक बड़े हिस्से द्वारा व्यापक रूप से समझा जाना चाहिए।”

कोविड काल के दौरान अपनी कलाकृति के लिए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा प्रशंसित कुंडू ने रामायण में वर्णित श्री राम कथा के प्रसंगों को अपनी कला से जीवंत कर दिया। इस कला प्रदर्शनी में रामायण के अनेकानेक अनूठे प्रसंग यथा श्री राम वन गमन, भरत से चित्रकूट में मिलाप, मारीच वध, सीता हरण, बाली-सुग्रीव युद्ध, जटायु प्रसंग, लंका दहन, विभीषण को अभयदान, राम-रावण युद्ध, कुंभकर्ण और रावण वध जैसे कैनवास पर जीवंत हो उठे थे। आप भी देखिए, अयोध्या में ‘रामायण कला उत्सव’ के दौरान प्रदर्शित कुंडू के मनोहारी और आकर्षक चित्रकला प्रदर्शनी की कुछ झलकियां



Sudipta Kundu



Sudipta Kundu's artwork on display at the Ramayana Kala Utsav painting exhibition



Ehsaas Women admire the art on display



Anindita Chatterjee shows Yatindra Mishra the exhibition



Udai Pratap Singh at the exhibition



Vidya Vindu Singh looks at Sudipta Kundu's artwork

अल्पमृत्यु नहीं कवनिउ पीरा, सब सुंदर सब बिरुज सरीरा



“जिन्ह के कपट दंभ नहीं माया, तिन्ह के हृदय बसैं रघुराया!”

और

“जिनके हृदय श्रीराम बसैं, तिन और का नाम लियो न लियो!!”

‘श्री राम’ एक ऐसा स्तोत्र है, मंत्र है, जाप है जिसके स्मरण मात्र से मानव अधिक धीर, संतुलित, शक्तिमान, और मर्यादावान हो जाता है।

राम-नाम वो ऊर्जा, उमंग है जो हर भारतीय के मन-मानस-मनस में बसी रहती है। हर भारतवासी के लिए राम भारत के इतिहास, विश्वास और एहसास की धारा है। उन्हीं परमपूज्य श्रीराम की गाथा, आख्यान, परंपरा, पौराणिकता, विवेचना और बखान को समर्पित था अयोध्या की पावन भूमि पर आयोजित ‘रामायण कला उत्सव’। अहसास वूमेन लखनऊ और अहसास वूमेन कानपुर के सहयोग से यह प्रभा खेतान फाउंडेशन की एक अतिविशिष्ट पहल थी, जिसमें मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम, श्री रामायण के पात्र, श्री राम से जुड़ी कला, श्री राम से जुड़ी संस्कृति, श्री राम के आदर्श, श्री राम की मर्यादा का स्मरण हुआ और रामायण के विभिन्न पहलुओं पर वार्ता-विमर्श भी हुआ। कार्यक्रम 7-9 अप्रैल 2023 तक चला।

7 अप्रैल की संध्या को उत्सव का उद्घाटन मुख्य अतिथि पद्मश्री से सम्मानित लेखिका डॉ विद्या विंदु सिंह, विशिष्ट अतिथि पुलिस निरीक्षक प्रवीण कुमार के कर कमलों द्वारा संपन्न हुआ। उद्घाटन सत्र में अहसास वूमेन नोएडा शिंजिनी कुलकर्णी ने अपने अविस्मरणीय नृत्य से आदि सीता का चंडी रूप भी दर्शाया।

उत्सव में राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय ख्याति के चिंतक, विचारक, लेखक, कलाकार, रचनाकार और संस्कृतिकर्मियों की उपस्थिति रही और रामायण के प्रति उनके विचारों को समझने का भी अवसर प्राप्त हुआ। किन्तु जैसा तुलसीदास जी ने लिखा:

“हरि अनंत हरि कथा अनंता, कहहि सुनहि बहुबिधि सब संता।

रामचंद्र के चरित सुहाए। कल्प कोटि लागि जाहिं न गाए॥”

विमर्श, चिंतन, व्याख्यान और संदेश के साथ ही ‘रामायण कला उत्सव’ की हर संध्या मनोहारी सांस्कृतिक कार्यक्रम से सुसज्जित रही, जिसमें प्रसिद्ध कलाकारों ने अपनी प्रस्तुति से श्री राम के जीवन-उत्सव, उनकी प्रेरणा, आदर्श, मर्यादा और संदेशों के प्रति अपना आदर प्रकट किया।

राम-जन्म से लेकर चारों भाइयों की शिक्षा-दीक्षा, राम-सीता के विवाह तक की कथा-गाथा के साथ, यहां यह भी जानने को मिला कि ‘सनातन धर्म’ में श्रीराम का क्या स्थान और सम्मान है।

राम शब्द का अर्थ ही है ‘श्यामल और सुंदर’। रामायण कला उत्सव में इसी सौंदर्य को विभिन्न लेखकों, चिंतकों तथा कलाकारों ने अपने अपने

विचारों तथा अनुभवों से उभारा।

“बंदऊँ अवध पुरी अति पावनि ! सरजू सरि कलि कलुष नसावनि!!”

यों तो न केवल भारत, अपितु विदेश में भी जगह-जगह रामायण उत्सव मनाये जा रहे हैं किन्तु प्रभा खेतान फाउंडेशन के प्रबंध न्यासी संदीप भुतोडिया ने इस कार्यक्रम को अयोध्या नगरी में आयोजित करने का उत्तम निर्णय लिया।

सरजू किनारे बसे जाने कितने नाम है इस प्राचीन नगरी के जो सात्विक सप्तपुरियों में से एक है। यह वो नगर है जिसे इस प्रान्त में बहुत श्रद्धा से हम ‘अजुध्या जी’ कहा जाता है। अयोध्या नगरी जहां युद्ध नहीं होते, श्री राम के मनुष्य रूप में अवतार लेने की भूमि भर नहीं है उनकी बाल लीला और कर्मस्थली भी है।

“राम अनंत अनंत गुन अमित कथा विस्तार!

सुनि अचरज न मानिहहि जिन्ह के बिमल बिचार!!”

साथ ही आदिकवि ऋषि वाल्मीकि से लेकर भारत भर में अपनी भाषाओं-रूपों में राम कथा कहने वाले कवियों-लेखकों-विद्वानों का उल्लेख भी रहा।

तभी तो गोस्वामी तुलसीदास ने कहा है:

“नाना रूप राम अवतारा! रामायण सत कोटि प्रकारा!!”

भगवान श्री राम और श्री रामायण के इन्हीं कोटि रूपों पर इस उत्सव में चर्चा हुई।

जहां एक सत्र में ‘श्री राम की अस्मिता और भारत की पहचान’ पर पद्मश्री से सम्मानित विद्या विंदु सिंह, उदय प्रताप सिंह तथा अहसास वूमेन कानपुर आरती गुप्ता ने चर्चा की वहीं ‘रामकथा में जानकी का महत्त्व’ पर प्रकाश डाला आशा प्रभात, मीनाक्षी एफ पॉल और कोरल दासगुप्ता ने।

‘Retelling the Ramayana over centuries’ विषय पर चर्चा की उदय प्रताप सिंह तथा अहसास वूमेन ऑफ लखनऊ कनक रेखा चौहान ने। इस सत्र में रामायण के विभिन्न आयामों पर चर्चा हुई। सामयिक, भौगोलिक और भाषा आधार पर रामायण के विभिन्न संस्करणों पर वार्ता हुई। और कैसे श्री रामायण आज भी एक आदर्श जीवन शैली के लिए उपयोगी है, विशेष रूप से जब सामाजिक स्तर पर हमारे परिवार बिखर से रहे हैं, तब रामायण एक परिपूर्ण मार्गदर्शिका है।

“पिता दीन्ह मोहि कानन राजू, जहं सब भांति मोर बड़ काजू।”

कई ऐसे विषयों पर भी चर्चा हुई जो श्रोताओं के लिए रोचक और लीक से हटकर थे। उदाहरण हेतु ‘Many Faces of Ravana’ पर आनंद नीलकंठन और अहसास वूमेन ऑफ लखनऊ दीपा मिश्रा ने रावण के बहुमुखी और जटिल चरित्र पर वार्ता की। नीलकंठन ने बताया कैसे उसकी मूढ़ता और

अहंकार ही उसकी बुद्धिमत्ता और रणनीतिक सोच के आड़े आ जाती है।

‘War & Diplomacy in Ramayana’ विषय पर आनंद नीलकंठन, अनंत विजय और मनोज राजन त्रिपाठी ने चर्चा की। इस सत्र में सीता मां को त्यागने के श्रीराम के हृदय विदारक निर्णय को लेकर कुछ कठिन असुविधाजनक प्रश्न भी उठे किन्तु कुल मिलाकर बहुत ही रोचक सत्र रहा।

एक ऐसा ही अद्भुत सत्र था ‘Mother Earth and Climate Change: Sita’s Prophecy’ जिस विषय पर प्रकाश डाला आनंद नीलकंठन, मीनाक्षी पॉल तथा कोरल दासगुप्ता ने। हम भारतीय युगों-युगों से प्रकृति को मां मानकर पूजते रहे हैं और राम कथा में भगवान को न जाने कितने तरह के वन-उपवन-जंगल-अरण्य-नदी-सागर पार करने पड़े। फिर तरह-तरह के राक्षस-राक्षसी-किन्नर-यक्ष आदि तरह-तरह के पशु-पक्षी भी समय-समय पर श्रीराम के वन में आने पर उनका विरोध भी करते रहे और सहयोग भी। जैसे तरह-तरह के राक्षस-राक्षसी-किन्नर-यक्ष आदि कुछ शांत, मधुर और कई रौद्र और वीभत्स पशु पक्षी, शूर्पणखा, खर-दूषण, मारीच, जटायु और वानर।

“रघुपति चित्रकूट बसि नाना! चरित किये श्रुति सुधा सामना!!”

किष्किन्धा में तो जिस तरह से वानरों और रीछों ने उनका सहयोग किया वह अविस्मरणीय है।

श्रीराम के पंपा-सरोवर पहुंचने से लेकर, सुग्रीव के साथ मित्रता, बालि-वध, अंगद और हनुमान से पहचान, हनुमान के लंका-गमन की यात्रा, श्री सियाराम गाथा प्रकृति की गाथा भी है।

‘Ramayana in Performing Arts’ में भारतीय संस्कृति की धरोहर विषय पर पद्मविभूषण से सम्मानित डॉ सोनल मानसिंह ने राम कथा की व्याप्तता और ग्राह्यता पर बहुत ही सुंदर मंत्रमुग्ध करने वाला व्याख्यान दिया।

‘रामायण कला उत्सव’ के एक सत्र ‘वैश्विक संदर्भ में रामायण और उसके पात्र’ विषय पर चर्चा की आशुतोष शुक्ल और बंदी नारायण ने। इस सत्र में अयोध्या के भौगोलिक, ऐतिहासिक, धार्मिक, सांस्कृतिक महत्त्व पर तो चर्चा हुई ही इसके साथ ही श्रीराम के राजतिलक की तैयारी, उनके निष्कासन, राजा दशरथ की मृत्यु और राम-सीता-लक्ष्मण के वन-गमन तक की गाथा, अयोध्या के भौगोलिक, ऐतिहासिक, धार्मिक, सांस्कृतिक महत्त्व को भी बताया गया।

‘लोक में राम’ विषय पर चर्चा किया मालिनी अवस्थी, मीनाक्षी एफ पॉल और यतीन्द्र मिश्र और मनोज राजन त्रिपाठी ने। इस सत्र में वक्ताओं से ज्ञात हुआ कि कैसे आस्थावान भारतीयों के लिए कण-कण और जन-जन में व्याप्त श्री राम के साथ ही हमारी श्रुतियों, परंपराओं, साहित्य, कला और संस्कृति में व्याप्त श्री राम की मर्यादा और आदर्श के साथ ही उनकी व्याप्ति के प्रति हमारी आस्था है, जो हमारी भारतीयता का प्रतीक है। श्री राम तो हमारे गीतों, लोक कथाओं में हैं। कभी बाल रूप में तो कभी राम बन्ना यानी दूल्हे के रूप में और आदर्श राजा के रूप में।

“राम सीय सुंदर प्रतिछाहीं। जगमगात मनि खंभन माहीं।

मनहुँ मदन रति धरि बहु रूपा। देखत राम बिआहु अनूपा॥”

सत्र ‘फिल्मों में श्रीराम का चरित्र चित्रण’ विषय पर प्रकाश डाला अनंत विजय, यतीन्द्र मिश्र और मनोज राजन त्रिपाठी ने। क्लासिक फिल्में जैसे रामराज्य के अतिरिक्त आजकल की नवीनतम फिल्मों पर भी चर्चा हुई जिनमें विशेष थी ‘आदिपुरुष’, ‘रामलीला’, ‘रावण’ इत्यादि।

‘Music Tradition in Ayodhya’ विषय पर प्रकाश डाला पद्मश्री से सम्मानित लोक गायिका मालिनी अवस्थी ने। उनके साथ वार्ता की शिंजिनी कुलकर्णी ने। अयोध्या में संगीत जहां श्री राम को समर्पित है वहीं वहां की मिलीजुली संस्कृत में तुमरी, चैती, ब्याह, सोहर आदि भी हजारों वर्षों से लोकप्रिय रहे हैं। प्रभु राम के जन्म गीत, विवाह गीत और वनवास गमन के अद्भुत अनुभवों को गाने की प्रथा मिरासिनो में भी प्रचलित है।

तीनों दिन संध्याकाल में विभिन्न कलाकारों ने मनमोहक प्रस्तुतियां प्रदर्शित कीं।

प्रभा खेतान फाउंडेशन भारत के प्रादेशिक लेखकों, कलाकारों, हस्तशिल्प कारीगरों का सम्मान करती है तथा फाउंडेशन के सहयोग से उनके कार्यक्रमों को मंचित भी किया जाता है। इसी शृंखला में उत्सव के दूसरे दिन अयोध्या के देव प्रसाद पाण्डेय और उनके सहयोगियों ने मनभावन भजन और लोक गीत प्रस्तुत किये। संगीता आहूजा और साथियों ने हृदय स्पर्शी श्री राम-शबरी संवाद नृत्य नाटिका प्रस्तुत की।

जहां एक ओर पद्मविभूषण से सम्मानित सोनल मानसिंह ने अपने नृत्य और भाव द्वारा बाल राम की अति मोहक क्रीड़ा और राम और सीता माता के विवाह का मनभावन चित्रण किया वहीं, अंजना चांडक ने अपनी प्रस्तुति ‘मंदोदरी’ के माध्यम से समाज से कई असहज कर देने वाले प्रश्न पूछती हैं? जैसे सहन शीलता क्या साहस का पर्यायवाची है? मंदोदरी, मजबूत, ज्ञानी, दयालु, सीता की तरह, अपने पति रावण को समर्पित जीवन जीती है, फिर भी उनका दृष्टिकोण कितना अलग था।

‘रामायण कला उत्सव’ के समापन समारोह में ‘कथा सियाराम की’ के क्रम में धनुष-यज्ञ प्रसंग की प्रस्तुति की प्रसिद्ध नृत्यांगना और नृत्य गुरु डॉ सोनल मानसिंह ने। आपका अति मनोहारी रामायण वाचन, गायन तथा नृत्य इस सुंदर उत्सव का सर्वोत्तम स्वस्तिवाद रहा।

“दैहिक दैविक भौतिक तापा! रामराज नहीं काहुहि व्यापा!

सब नर करहि परस्पर प्रीती! चलहि स्वधर्म निरत श्रुति नीती!!”

इस आशा से सभी अतिथियों ने विदा ली कि भारतभूमि पर फिर वही रामराज्य होगा जहां-

“अल्पमृत्यु नहीं कवनिउ पीरा। सब सुंदर सब बिरुज सरीरा!

नहिं दरिद्र कोउ दुखी न दीना। नहिं कोउ अबुध न लच्छन हीना!!”

जय सिया राम ! जय सिया राम !

— कनक रेखा चौहान

अहसास वूमेन लखनऊ



The three days of the *Ramayana Kala Utsav* will be remembered and cherished forever, as, on these days, I had the privilege of being in the holy city of Ayodhya. It was 'hum sab ki Ayodhya' and there were 15 other **Ehsaas** Women from all over India. It was special, and I strongly feel we women were just destined to be there; it was a calling of Sita-Ram to their Ayodhya.

I thank **Prabha Khaitan Foundation** and its dedicated team for providing such an amazing opportunity and for organizing the festival in Ayodhya. The entire fest was so well curated and thought out. Each session left me spellbound for more. The quest to know more and hear different perspectives on the epic, the *Ramayana*, and its characters has always been there, and this festival quenched my thirst and opened doors for learning more. Many questions and doubts that were harboured since childhood were answered, thanks to our chosen and learned speakers and panellists. I thank them profusely.

The *darshan* of Ram Lalla, Hanuman Garhi, Nageshwar Nath temple and the *ghats* of the river Sarayu left a deep imprint on our hearts, minds and souls. The cultural aspect of the festival, which included *bhajans*, dance, discourses by the Padma Shree awardee Sonal Mansingh and Malini Awasthi, the monologues by Anjana Chandak, and the opening dance by Shinjini Kulkarni left us mesmerised. The icing on the cake was Yatindra Mishra's invitation to his palace for dinner on the last day of our stay. All of us had a very relaxed evening and enjoyed the royal hospitality that he showed us along with his parents and his sister Manjari Mishra. We returned home feeling happy and full of special memories and stories to relive.

Opportunities like this strengthen the bond that we as **Ehsaas** Women share. We learn and get to know each other more closely, and it is so nourishing and fulfilling. For this, I thank the Foundation.

— Anubha Arya, **Ehsaas** Woman of Patna



The *Ramayana Kala Utsav* was an enriching experience for the soul. Being a Hindu, the *Ramayana* has been a part of me since childhood. I have grown up listening to the stories of the *Ramayana*. It was quite astonishing to listen to the various versions of the epic from state to state and their belief systems.

The monologue acts by Anjana Chandak on Kaikeyi and Mandodari gave me a different perspective, and I gained information that I was unaware of. The performances by Dr Sonal Mansingh mesmerised the audience and, I could vividly imagine the *swayamvar* of Goddess Sita. The panel discussions by Yatindra Mishra, Anant Vijay, Anand Neelkantan, Koral Dasgupta, Asha Prabhat, Meenakshi F. Paul, Manoj Rajan Tripathi and other esteemed panellists gave rise to many questions regarding the beliefs that we have held to for years.

Malini Awasthi's insightful discussion of the music tradition was enlightening. Listening to her was a treat to the ears. Shinjini Kulkarni's performance was breathtaking, and it embodied how the Goddess Kali comes alive in us when certain situations call for it. On the whole, I truly feel blessed to have been a part of the well-curated festival by the team of **Prabha Khaitan Foundation**.

— Nidhi Garg, **Ehsaas** Woman of Bhubaneswar



While I was returning from Ayodhya towards New Delhi, I reminisced about a role I played in 2005, in a play called *Bhumi Kanya Sita*. It was based on B.V. Waverkar's works, staged at JKK, Jaipur, and directed by Vishal Vijay, a graduate of the National School of Drama. I played Sita, the title role. For the love of theatre, this role fell into my lap like a memory I'd hold onto forever. From someone who was into William Shakespeare and George Bernard Shaw during college and Western themes post college, this mythology-based play in Hindi was quite a challenge.

Today, when, after years, Ayodhya is back in the mainstream and Ramjanmabhoomi is getting a new face, a proposal for an event in Ayodhya by **Prabha Khaitan Foundation** was something I never would have missed. As an **Ehsaas** Woman, I got the opportunity to be a part of this magnificent fest. It was my first time in Ayodhya and also in Lucknow, from where I drove to Ram Lalla's home. My excitement was at its zenith.

During the festival, meeting the stalwarts Vidya Vindu Singh, Sonal Mansingh, Malini Awasthi, Anant Vijay, Yatindra Mishra and others was truly spellbinding and a learning experience. The heartfelt presentations, discussions and performances made the three-day fest a mammoth hit. Meeting the wonderful **Ehsaas** Women and associates from all parts of the country was a delightful experience as always. The team of the Foundation deserves all the accolades for a seamless programme. The divine *darshan* of Hanuman Garhi and Ram Lalla ki Padi made the trip fulfilling and complete.

The warmth and hospitality of the scion of Ayodhya, Bimlendra Mohan Pratap Mishra, Jyotsna Devi Mishra, their wonderful children Yatindra and Manjari Mishra, and the entire family will always be remembered. A walk around their beautiful, art-bound Ayodhya Palace, also called the Raj Sadan, took me back to an unrealised time in history.



Shraddha Murdia portrays Sita in the play *Bhumi Kanya Sita*

In the play, Sita questions Ram, and I have come to believe that if there's anyone who could question Ram, it was, and is, only Sita. They're only answerable to each other. The love they shared with each other was and always will be the most exemplary, intimate, special and beyond anything we can imagine.

— Shraddha Murdia, **Ehsaas** Woman of Udaipur



The *Ramayana Kala Utsav* organised by **Prabha Khaitan Foundation** was a beautiful and enriching experience. It was my privilege to be a part of it, in Ayodhya. The festival filled us up so deep inside with art, culture, knowledge and vibrancy, thanks to its well-curated sessions and mesmerising performances. The whole concept and its execution were superb.

— Surbhi Dhupar, **Ehsaas** Woman of Indore

Of Faith and Holy Cities

As always, it was the **Ehsaas** Women who played a pivotal role in the success of the *Ramayana Kala Utsav* — they put all their passion into the festival, and helped turn it into the resounding success it was. These dynamic women also made the most of their time in the

holy city of Ayodhya – after all, the birthplace of Lord Ram is bound to settle firmly into the hearts of believers. Catch a few glimpses of the wonderful **Ehsaas** Women as they took in the wonders of the temples of the holy city of Ayodhya.



Dimple Trivedi and Kanak Rekha Chauhan at the ghats of the river Sarayu



Dimple Trivedi at a temple in Ayodhya



Kanak Rekha Chauhan and Deepa Mishra



Shraddha Murdia at the Ram Mandir



Nidhi Garg at the Ram Mandir



Shraddha Murdia at a temple in Ayodhya



Rachna Seth, Nidhi Garg, Kanak Rekha Chauhan, Dimple Trivedi, Anand Neelakantan and Deepa Mishra take a picture after offering prayers at a holy temple in Ayodhya



“I'd like to give my compliments to **Prabha Khaitan Foundation** for the wonderful festival that they put up in Ayodhya, titled the *Ramayana Kala Utsav*, to explore the impact of the *Ramayana* on our culture, our literature and our arts. In fact, the *Ramayana* and Lord Ram's message have impacted every aspect of the Indian way of life for thousands of years; therefore, literature and culture cannot remain divorced from it. As the Ram Janmabhoomi temple is rebuilt in Ayodhya, many of these discussions are becoming moot and alive once again, so what **Prabha Khaitan Foundation** is doing is very topical. My congratulations and compliments to the Foundation; I hope that Lord Ram continues to bless this venture with all the grace and success.”

Amish Tripathi

Author and Director of the Nehru Centre in London,
Minister of Culture and Education at
the High Commission of India to the UK



ARTWORK BY SUDIPTA KUNDU

अपनी भाषा अपने लोग

Handscripted by Paresh Maity

Prabha
प्रभा








श्री राम रामेति रामेति, रमे रामे मनोरमे
सहस्रनाम तत्तुल्यं, रामनाम वरानने।

बिनु सतसंग बिबेक न होई।
राम कृपा बिनु सुलभ न सोई॥



The digital version of the newsletter is available at pkfoundation.org/newsletter

 newsletter@pkfoundation.org

    [prabhakhaitanfoundation](https://www.instagram.com/prabhakhaitanfoundation)

For private circulation only